[Dr. M. S. Aney]

there may be nobody to give him authority and even that risk must be covered. I cannot imagine how a private person can think of repelling an imagined attack by an enemy. If he does that, it is for a different purpose. I want him to at least add the words "under proper authority".

Mr. Deputy-Speaker: We have passed the Bill.

Dr. M. S. Aney: In giving effect to this section, when the rules are framed, he should make some such suggestion and then the difficulty will be solved. That is all

Shri Morarji Desai: May I say that this imagined attack will apply only in cases of attack which has to come and the people are asked to vacate something, which is a thing which can be covered and that ought to be covered. That would be only if the Government authorises them to do so. Unless the Government authorises, nobody is going to pay.

Mr. Deputy-Speaker: The question is:

"That the Bill, as amended, be passed."

The motion was adopted.

15.39 hrs.

COMMITTEE ON PRIVATE MEMBERS' BILLS AND RESOLUTIONS

(TWELFTH REPORT)

Shri Hem Raj: I beg to move:

"That this House agrees with the Twelfth Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 5th December, 1962."

Mr. Deputy-Speaker: Motion moved:

"That this House agrees with the Twelfth Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 5th December, 1962."

Shri D. N. Tiwary: I would suggest that the time for the discussion of this Resolution should be extended.

Mr. Deputy-Speaker: Afterwards. I will come to that.

Shri Hari Vishnu Kamath: He wants to speak on the motion.

Shri D. N. Tiwary: I want that the time allotted for Shri Yashpal Singh's resolution should be extended.

Mr. Deputy-Speaker: The hon. Member is referring to the pending resolution. That is a different matter. I shall now put the motion regarding the report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions to vote.

The question is:

"That this House agrees with the Twelfth Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 5th December, 1962."

The motion was adopted

15.41 hrs.

RESOLUTION *RE*: AYURVEDIC *SYSTEM—contd.*

Mr. Deputy-Speaker: The House will now take up further discussion of the following resolution moved by Shri Yashpal Singh on the 23rd November, 1962, namely:—

"This House is of opinion that allopathic system of medicine be replaced by the Ayurvedic system in the country.".

The time allotted is 1 hour. Six minutes have already been taken, and there is a balance of 54 minutes.

Shri D. N. Tiwary: The time for this resolution should be extended.

श्री बिशनचन्द्र सेठ (एटा) : एक घंटे में सब माननीय सदस्य कैसे बोल सकेंगे ?

श्री यशपाल सिंह: यह तो देश के ४४ मिलियन लोगों का सवाल है ।

श्री कछवाय (देवास) : तीन घंटे दिये जाने चाहिए ।

Shri D. N. Tiwary: I want that the time for this resolution should be extended by at least one hour.

Shri Khadilkar (Khed): This resolution is very important from one point of view, because in this country an integrated system of Ayurveda and Allopthy has come to stay, and recently Government have taken a decision at variance with the present system. So, the time may be extended to at least 3 hours.

Shri Surendranath Dwivedy (Kendrapara): The next resolution is also very important.

Shri Yashpal Singh: Three nours may be allotted to this resolution.

Mr. Deputy-Speaker: In addition to what has been allotted already? There is a balance of 54 minutes even now.

Shri Yashpal Singh: The sense of the House may be accepted.

Shri Bhagwat Jha Azad: I oppose it. The next resolution also should be taken up today.

श्री बिशन चन्द्र सेठ: अगर उसको कल, साढ़रडे को, ले लिया जाये, तो क्या हर्ज है?

Shri Bhagwat Jha Azand (Bhagalpur): I have nothing to say about how much time should be allotted to this resolution, but I would submit that I have also got my resolution which comes next to it, and I want that I should have the opportunity to move it today, so that it may not lapse.

श्री यशपाल सिंह: यह तो ४४ करोड़ इन्सानों का सवाल है ।

Shri Surendranath Dwivedy: The second resolution is also a very important one, and the hon. Mover of that must have time at least to move it today. If you extend the time for this resolution, then I submit that the hon. Mover of the next resolution must be given some time at least to move it today.

Shri Ranga (Chittoor): If you read that resolution carefully you will find that there are three subjects within one resolution. Ordinarily, according to our standing rules, a resolution should relate to one specific subject only.

Mr. Deputy-Speaker: We shall see that when we come to that resolution.

श्री रामेश्वरानन्द (करनाल) : मैं यह कहना चाहता हूं कि यह बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है । आयुर्वेद की विशेषता को बताने के लिए तीन घंटे से भी ज्यादा चाहिए, कम का तो प्रश्न ही नहीं है ।

Shri Hari Vishnu Kamath: (Hoshangabad): As a *via media* I suggest that this resolution may be discussed till 5:55 P.M., and the other resolution may be taken up at 5.55 P.M., that is, just five minutes before six o' clock, when the House will adjourn.

Shri Khadilkar: That is a good compromise.

Shri Raghunath Singh: That is a good compromise.

Mr. Deputy-Speaker: We have got 2½ hours. So, we shall extend it to about 2 hours.

Shri Shivaji Rao S. Deshmukh (Parbhani): The Mover of the next resolution should get his chance to move it.

Mr. Deputy-Speaker: Yes, he will get his chance.

Dr. Sushila Nayar: May I know till what time this resolution will go on? It is now about a quarter to four o' clock.

Mr. Deputy-Speaker: It will go on till a quarter to six o' clock.

The Deputy Minister in the Ministry of Labour and Employment and for Planning (Shri C. R. Pattabhi Raman): I think that the next resolution will only be moved.

Mr. Deputy-Speaker: It can be moved today, and it can be taken up later. It would not be finished today.

श्री यशपाल सिंह (कैराना) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं ने उस दिन इस रेज़ोल्यूशन को पेश किया था । महात्मा गांधी जी के सम्पर्क में सब से ज्यादा हमारी स्वास्थ्य मंत्रिणी रही हैं और महात्मा गांधी इस देश में एलौपैथी के सब से बड़े मुख़ालिफ़ रहे हैं । गांधी जी के नाम पर और देश की संस्कृति के नाम पर मैं मानभीया स्वास्थ्य मंत्रिणी से यह प्रार्थना करूंगा कि इस ज़माने में जब कि गुलामी का कलंक हमारे ऊपर से हट चुका है, तो एलौपैथी का बोझ भी हमारे ऊपर से हट जाना चाहिए ।

आज आयर्वेद की तरक्की के लिए सरकार ने कुछ नहीं किया है और इसके बावजूद यह कहा जाता है कि आयुर्वेद अधूरा है । मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि सौ आदमी हमको और सौ आदमी एलौपैथी को इलाज के लिए सौंपे जायें और अगर हमारा रिज़ल्ट उन से बैटर न रहे और हम अस्सी फ़ीसदी आदमियों को अधिक क्योर न कर दें, तो हम इस मांग को वापिस ले लेंगे और हम लोगों के हाथ कटवा दिये जायें ।

यह तो अंग्रेज़ की दलील थी कि अगर वे यहां से चले जायेंगे, तो हिन्दू-मुसलमान लड़ कर मर जायेगा और इन्सान इन्सान को काट कर खा जायेगा । आज यही दलील एलौपैथी के लिए दी जाती है और इस कारण आयुर्वेद को कोई मौका नहीं दिया जाता है । मैं आप को बताना चाहता हूं कि इस देश के विभिन्न प्रदेशों में आयुर्वेद की उन्नति के लिए कितना रुपया ख़र्च किया जाता है । आयुर्वेद की तरक्की के लिए आन्ध्र प्रदेश में **पर कैपिटा** ६ नये पैसे, आसाम में **पर कैपिटा** ५ नये पैसे, बिहार में **पर कैपिटा** १ नया पैसा, बम्बई में **पर कैपिटा** ८ नए पैसे, जम्मू-काश्मीर में **पर कैपिटा** ११ नये पैसे, केरल में **पर कैपिटा** १६ नये पैसे और मध्य प्रदेश में **पर कैपिटा** ७ नये पैसे ख़र्च किये जाते हैं । दिल्ली में आयुर्वेद के लिए एक पैसा भी ख़र्च नहीं किया जाता है, जहां कि गांधी जी की सीट है और जहां पर कि उन के नाम पर इस हुकूमत को चलाया जा रहा है । इसी तरह मणिपुर, त्रिपुरा और अंडमान में भी आयुर्वेद के लिए एक पैसा ख़र्च नहीं होता है ।

इसके मुकाबले में जो सिस्टम **डिके** कर रहा है, जिस सिस्टम को अमरीका और जर्मनी ख़त्म करने जा रहे हैं, उसी सिटम को हमारे ऊपर लादा जा रहा है । मैं आप के सामने उन लोगों के नाम लेता हूं, जो कि मेडिकल साइंस में **पाइएस्ट अथारिटी** माने जाते हैं, जैसे विटर निट्स, मैकफेउन और जुस्ट । एलेक्सिस कैरल, जिन्होंने सर्जरी में नोबेल प्राइज़ विन किया है, अपनी किताब में लिखते हैं :—

"Unintelligence is becoming more and more common in spite of the excellence of the courses given in schools, colleges and universities. Strange to say, it often exists with advanced scientific knowledge."

साइंस की तरक्की का यह हाल है कि आज से दस साल पहले क्वनीन मिक्स्चर बुख़ार की सुन्दरतम औषधि मानी जाती थी । क्वनीन मिक्स्चर के बाद तीन औषधियां और आई और अब सिवाये इंजेक्शन के और कोई इलाज एलौपैथी के पास नहीं रहा है । इस के बावजूद दिल्ली जैसी जगह में, जहां कि गांधी जी के नाम से हुकूमत की जाती है, आयुर्वेद के लिए एक पैसा भी ख़र्च नहीं किया जा रहा है । स्वास्थ्य मंत्रिणी जी से मेरी प्रार्थना है कि दिल्ली में आयुर्वेद पर सब से ज्यादा रुपया ख़र्च होना चाहिए ।

जिस आयुर्वेद का मैं जिक्र करता हूं मैं उसको **वे आफ लाइफ** कहता हूं, इन्सान की ज़िन्दगी का तरीका कहता हूं । जिस संस्कृति को हम मानते हैं, वह मां, मदर, की संकल्पना है । हम गंगा माता की संस्कृति को, मादर-वतन

की संस्कृति को मानते हैं। इस की तुलना में पश्चिम ने हमको तीन चीजें दी हैं। **बार, वाइन** और **वाइफ**। उस की संस्कृति मां का संस्कृति नहीं है। मैं बहुत मोटे शब्दों में यह अर्ज करना चाहता हूं कि जो लोग आज यह कहते हैं कि हमारा देश बाद में है और हमारा धर्म पहले है, व धर्म और देश के रिश्ते को भूल जाते हैं। हमारा धर्म और कोई नहीं है— हमारा धर्म हमारा देश है। "जननी जन्म-भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"। हमारा धर्म हमारा देश, हमारी आजादी और हमारी भारत-माता है। इस से अलग हमारा कोई धर्म नहीं है।

पश्चिम की संस्कृति को मैं **वाइफ** की संस्कृति इस लिए कहता हूं कि अगर मेरी **वाइफ** आ जाये और यहां पर बैठना चाहे, तो वह ऐन मेरी नाक के सामने डिस्टिंग्विश्ड विज़िटर्ज़ गैलरी में बैठेगी। लेकिन अगर मेरी मां आ जाए तो वह छः घंट तक परेशान होगी, उसको पास भी मुश्किल ही मिलेगा। डिस्टिंग्इश्ड गैलेरी किस के लिए है। यह **वाइफ** के लिए है, मां के लिए नहीं है। मैं जिस संस्कृति को मानता हूं वह गंगा माता की संस्कृति है। मैं उस संस्कृति को मानता हूं जो कहती है कि गंगा माता की गोदी में, उसके किनारे पर पैदा होने वाली औषधियां हमें अच्छा कर सकती हैं, उस संस्कृति को नहीं मानता हूं जो हमें विदेश के ऊपर निर्भर करती है जिन को ये अच्छा नहीं कर सकती हैं। जो इन औषधियों से अच्छा नहीं हो सकता है, वह देश भक्त नहीं हो सकता है। देश भक्त वह होगा. . .

श्री रा० शि० पाण्डेय (गुना): अगर माननीय सदस्य. . .

श्री यशपाल सिंह: जिस को गंगा माता के किनारे पैदा होने वाली औषधियां अच्छा नहीं कर सकती हैं, जिस को हिमालय पिता की गोदी में पैदा होने वाली जड़ी बूटियां अच्छा नहीं कर सकती हैं, लेकिन जो वीयना में इलाज कराता है, जो विलायत की बनी हुई औषधियों से अच्छा होता है, दूसरे मुल्कों से मंगाई गई औषधियों से स्वस्थ होता है, उसको मैं राजनीतिज्ञ भले ही कह दूं, पंडित भले ही कह दूं, देश भक्त मैं हर्गिज नहीं कह सकता हूं। देश भक्त का मतलब यह है कि इस देश की संस्कृति के साथ उसका लगाव हो, गंगा माता के साथ हिमालय के साथ और वहां पर पैदा होन वाली औषधियों के साथ उसका प्रेम हो। उसे ही मैं देश भक्त कह सकता हूं। मैं भारतेन्दु हरिश्चंद्र के शब्दों में कहना चाहता हूं :—

परभाषा पर भाव पर औषध पर परिधान
पराधीन जन की अहै यह पूरी पहचान।

जिन को दूसरे मुल्कों में तैयार हुई औषधियों से आराम होता है, उन्हें मैं देश भक्त नहीं कह सकता हूं

इसके साथ ही साथ मैं यह भी बतलाना चाहता हूं कि आयुर्वेद के साथ बेइंसाफी हो रही है। मैं पूरे फैक्ट्स एंड फिगर्ज में जाना नहीं चाहता हूं। लेकिन इतना मैं अवश्य कहना चाहता हूं कि आंध्र प्रदेश में एलोपैथी का बजट २८९ लाख है लेकिन उसमें वहां पर केवल ६.३ आयुर्वेद पर खर्च होता है। बिहार में एलोपैथी का बजट है २५२ लाख लेकिन वहां पर आयुर्वेद पर खर्च होता है केवल १.७ लाख। ऐसी हालत में आप ख़याल करें कि किस तरह से आयुर्वेद उन्नति करेगा। वह तभी उन्नति करेगा जब गवर्नमेंट उसको प्रोत्साहन दे। मुझे इसकी और किसी से आशा नहीं है। मुझे आपसे आशा इसलिए है कि गांधी जी का यह ख्याल था, उनका यह कहना था कि जितनी औषधियां हैं, जितनी एलोपैथी की दवाइयां हैं, अगर इन दवाइयों को उठा कर समुद्र में डाल दिया जाए तो यह तो नुक्सान अवश्य होगा कि मछलियां मर जायेंगी लेकिन मानव जाति बच जाएगी। उन्हीं गांधी जी की प्रतिनिधि, उन्हीं गांधी जी की शिष्या, उन्हीं गांधी जी की अनुयायिनी और उन्हीं के आदर्शों के ऊपर चलने वाली हमारी स्वास्थ्य मंत्रिणी

[श्री यशपाल सिंह]

जी यहां बैठी हुई हैं। उनसे मैं निवेदन करता हूं कि अगर इस एलोपैथी को एकदम खत्म नहीं किया गया तो सौ साल तक भी यह खत्म नहीं होगी ।

कई लोग कहते हैं कि सर्जरी कहां से आएगी । मेरी दिक्कत यह है कि गलत बुद्धि में सही बात नहीं आ सकती है । जो बुद्धि गलत है, जो लोग शराब पीते हैं, जो लोग सिग्रेट पीते हैं, उनकी समझ में यह बात नहीं आएगी, जो लोग अश्लील सिनेमा देखते हैं, उनकी समझ में नहीं आएगी । सही बुद्धि में ही सही बात समझ में आएगी । जो लोग यह कहते हैं कि सर्जरी कहां से आएगी जो लोग यह कहते हैं कि सर्जरी का क्या होगा, उनसे मैं कहना चाहता हूं कि सर्जरी सुश्रुत की है । जितनी सर्जरी इस वक्त है, उसके मैं खिलाफ नहीं हूं, उसको आज ही आयुर्वेद के मातहत कर दिया जाए । अंग्रेजों के जमाने में जो आई० सी० एस० अफसर थे, जो सैक्रेटरी थे, जो कमिश्नर थे, जो कलैक्टर थे, जब हम स्वतंत्र हुए, जब यहां पर नैशनल गवर्नमेंट स्थापित हुई, उसी दिन से वे सब नैशनल गलवर्नमेंट के नीचे आ गए । इसी तरह से जितनी सर्जरी है, यह सुश्रुत की सर्जरी के नीचे कायम की जाएगी । उस पर आयुर्वेद का कंट्रोल होगा ।

आज भी कई लोग हैं जो इसको मजाक समझते हैं । एक गांव में एक बूढ़ा आदमी था । उसको जब बताया गया कि क्या उसे मालूम है कि एक राकेट ४२ हजार मील एक घंटे में जाता है, और यह खबर अखबार में छपी है, तो उसने कहा यह नहीं हो सकता है और यह गप्प है और अगर इस तरह की गप्पें अखबार वाले न छापें तो उनके अखबारों की बिक्री कैसे हो । बिक्री करने के लिए उनको ऐसी खबरें छापनी पड़ती हैं ।

मेरी समझ में नहीं आता है कि आज जब कि हम जंग में मसरूफ हैं, जिस वक्त कि हम चीन से लड़ रहे हैं, चीनी फौजों को खदेड़ रहे हैं, उस वक्त आयुर्वेद काम कर सकता है या जो दवायें पांच या दस हजार मील दूर से मंगानी पड़ती हैं, वह काम कर सकती है । उनसे हमारा कोई ताल्लुक नहीं है । उनका खर्चा हम बर्दाश्त कर नहीं सकते हैं । और उनको आते आते भी देर लगेगी और वक्त के ऊपर वे काम नहीं दे सकेंगी ।

मेरी अर्ज यह है कि ओरिजनल थिंकिंग से काम लिया जाए । ओरिजनल थिंकिंग क्या हो सकती है और कैसे वह हो सकती है ? मैं आपको उदाहरण दे कर इसको बतलाना चाहता हूं । साउथ एवेन्यू में रहने वाले एम० पीज० का ही मैं जिक्र करता हूं । जो पानी वहां पर मिलता है वह राशन का मलता ह । जब पानी पीने का समय होता है तो पानी खत्म हो जाता है, स्नान का समय होता है तो पानी खत्म हो जाता है, लखनऊ से गाड़ी आधा घंटा लेट आती है तो पानी नहीं मिलता है । यहां पर जो पानी है, वह राशन का है । दूध जो है वह दिल्ली मिल्क सप्लाई स्कीम का है जो कि ७२ घंटे बाद तक्सीम होता है । जो दूध आज गाय या भैंस के नीचे बैठ कर दूहा जाता है उसको तीन दिन बाद जा कर सप्लाई किया जाता है । उस वक्त तो वह दूध की लाश बन जाती है, उस वक्त तो उसके जितने विटामिज हैं, वे सब मर जाते हैं । हमारे मंत्री जी बड़े गर्व से पूछते हैं कि बोतलों का दूध है न ? दिल्ली मिल्क सप्लाई स्कीम का दूध है न ? दूध तो ७२ घंटे का बासी मिलता है, पानी राशन का मिलता है । पानी तौल कर मिलता है । और अगर आप ऊपर चले जायें रिफशमेंट रुम में तो आपको जो समोसा मिलेगा वह कोटोजम का बना हुआ मिलेगा । उपाध्यक्ष महोदय, यह कोटोजम एटम बम से भी ज्यादा खतरनाक है । एटम बम तो एक दम किसी को फूंकता है लेकिन यह कोटोजम गला गला कर मारता है, यह कोटोजम इंसान के कारेक्टर का शत्रु है, जिस संस्कृति के ऊपर

आज हम खड़े हैं, उसका शत्रु हैं। आज हम जिस संस्कृति के ऊपर खड़े हैं, जिस तमद्दुन के ऊपर खड़े हैं, वह ब्रह्मचर्य की संस्कृति है, ब्रह्मचर्य का तमद्दुन है। आयुर्वेद इस बात को कहता है :–

अभिक्रन्दन् स्तनयन् अरुणः शितियो
वृहच्छपो नु भूमौ जभारः

आज डाक्टरों ने एक ढकोंसला बना रखा है, कि डिलीवरी कोई बीमारी है। में जानता हूं कि एनीमल किंगडम में घोड़ी का जो बच्चा होता है वह एक घंटे के बाद घोड़ी के साथ दौड़ता है, हिरन का जो बच्चा होता है वह एक घंटे के बाद हिरन के साथ दौड़ता है। खान अब्दुल गफार खां के सरहदी इलाके में मैंने एक बहन को देखा है कि वह घोड़े के लिए घास चारा लाने का काम किया करती थी और उसके सवेरे बच्चा पैदा हुआ और बारह बजे वह काम पर आ गई। यह जो डिलीवरी की बीमारी है यह एलोपथी की दी हुई है। यह बहुत ही नार्मल सी चीज है, बहुत ही नेचुरल सी चीज है। उस कलचर को हम मानते हैं जिसमें कहा गया है कि यह बिल्कुल नार्मल चीज है, बिल्कुल नेचुरल चीज है। कमजोरी के कारण ही तो बीमारी होती है। जिस तमद्दुन को हम मानते हैं वह ब्रह्मचर्य के ऊपर खड़ा हुआ है और ब्रह्मचर्य का दुश्मन यह कोटोजम है। जिस तरह से कसाई के सामने जाती हुई गाय थरथर कांपती है, उसी तरह से कोटोजेम से ब्रह्मचर्य कांपता है। अगर सरकार और कुछ नहीं कर सकती है तो इतना तो जरुर कर दे और ऐसा रुल जरुर बना दे कि इस पार्लिमेंट के अन्दर और कहीं भी कोटोजम या डाल्डा इस्तेमाल न हो सके। देश का अगर निर्माण आपको करना है तो आज ही करना है। अगर आज नहीं किया तो कभी नहीं हो सकेगा। हमने अपने आप को अंग्रेजों के चंगुल से आजाद कराया है लेकिन आज भी अंग्रेजों को हम करोड़ों रुपया दवाइयों का जो वहां से मंगाते हैं, उसका देते हैं। यह सब बन्द होना चाहिये।

में चाहता हूं कि देश की संस्कृति के अनुरूप हम कार्य करें। जामनगर में हमने आयुर्वेदी की एक संस्था कायम की है, जो एक मात्र बड़ी संस्था है और उसके बारे में भी सरकार कहती है कि वह इसको अपने हाथ में नहीं रखेगी, उसको वह किसी प्राइवेट कमेटी को सौंप देगी। तिबिया कालेज जिस के साथ हकीम अजमल खां का नाम जुड़ा हुआ है उसको अपने हाथ में नहीं लेती है और कहती है कि एक प्राइवेट कमेटी के द्वारा वह चलाया जाएगा, गुरुकुल कांगड़ी और ऋषिकुलों को सरकार अपने हाथ में नहीं लेती है, उनको करोड़ों रुपये की इमदाद नहीं देती है, रुपया देती है विलायत से दवाइयां मंगाने के लिए, विलायत से पानी मंगाने के लिए।

में दरख्वास्त करता हूं कि गांधी जी के नाम पर, देश की संस्कृति के नाम पर एलोपथी को हम एक दफा खत्म कर दें, जड़ से इसको मिटा दें, इसकी तनिक भी जरुरत नहीं है। आप कहते हैं कि राय ले ली जानी चाहिये। लेकिन में कहता हूं कि राय लेने की जरुरत नहीं है। अच्छा काम जब किया जाता है तब राय नहीं ली जानी चाहिये। कोई बुरा काम किया जाना हो तब राय लेने की जरुरत महसूस हो सकती है। घर को फूंकने के लिये राय नहीं लेनी चाहिए। अपनी दौलत लुटाने के लिये राये नहीं ली जानी चाहिये लेकिन इसी काम में राय क्यों ली जानी चाहिये? अगर अंग्रेज राय लेते कि हम यहां पर एक ऐसी ट्रेन चलाना चाहते हैं जिस में भंगी और ब्राह्मण एक जगह बैठ कर चलेंगे, चमार और ठाकुर एक जगह बैठ कर सफर करेंगे तो आज तक हिन्दुस्तान उसके लिए वोट देने वाला नहीं था। ऐलोपथी इसको हमें एक दम खत्म करना है। आज हमारा नारा होना चाहिये "**नऊ आर नेवर**"। आज सोचने की जरूरत नहीं है। या तो इसे आज किया जाए वर्ना फिर कोई मौका नहीं आएगा। में चाहता हूं कि आप के सुन्दर हाथों से एलोपैथी नष्ट हो, सुन्दर हाथों से आयुर्वेद का चमत्कार हो, आज की सर्जरी सुश्रुत की

[श्री यशपाल सिंह]

सर्जरी है, और इसको आयुर्वेद के मातहत लाया जाए और एक साल में देखा जाएगा कि हमारी यह सर्जरी कितनी अधिक तरक्की करती है ।

Mr. Deputy-Speaker: Resolution moved:

"This House is of opinion that allopathic system of medicine be replaced by the Ayurvedic system in the country".

Dr. Gaitonde (Nominated—Goa, Daman and Diu): I beg to move:

That for the original Resolution, the following be substituted, namely:—

"This House is of opinion that Allopathic and Ayurvedic system of medicine be replaced by Scientific Medicine". (1).

Dr. L. M. Singhvi (Jodhpur): I beg to move:

That for the original Resolution, the following be substituted, namely:—

"This House is of opinion that the Ayurvedic system of medicine should be given increasing aid and attention so that it may flourish". (2).

Shri Raghunath Singh (Varanasi): I beg to move:

That for the original Resolution, the following be substituted, namely:—

"This House is of opinion that along with allopathic system of medicine, wherever it may be possible, Ayurvedic system of medicine be also used effectively". (3)

Shri Rananjai Singh (Musafirkhana): I beg to move:

That in the Resolution,—

(i) *after* "that" *insert*—"Ayurvedic System of medicine be given preference to";

(ii) *for* "be replaced by the Ayurvedic System", *substitute*—"and particularly enforced" (4).

Shri D. N. Tiwary (Gopalganj): I beg to move:

That at the end of the Resolution, the following be added, namely:—

"after ten years and in the meantime as a step towards that end, Government should open Ayurvedic Post-Graduate training and Research Institutes in every State" (5).

Shri B. K. Das (Contai): I beg to move:

That for the original Resolution, the following be substituted, namely:—

"This House is of opinion that Ayurvedic system of medicine be given adequate encouragement, facilities, status and financial assistance to provide full scope for its development". (6)

Mr. Deputy-Speaker: The original Resolution and the amendments moved thereon are now before the House.

16 hours.

Dr. Gaitonde (Goa, Daman and Diu): I thought that my hon. friend who moved the Resolution would naturally defend ayurveda, but I came to the conclusion after hearing him that what he has done is exactly the opposite. He has quoted twice or thrice Mahatma Gandhi. I do not know why Mahatma Gandhi's name was brought in here as far as ayurveda is concerned.

Mr. Deputy-Speaker: There are about 22 speakers who are anxious to speak. Even if I give five minutes each, I will not be able to accommodate all.

Dr. L. M. Singhvi: This is a very momentous resolution.

Mr. Deputy-Speaker So, Members will have five minutes each.

Dr. Gaitonde: I think it is a very important matter.

The Minister of Health (Dr. Sushila Nayar): I wish to submit to you whether it would not be better to have fewer speakers and enable them to express themselves than give five minutes each to several speakers?

Mr. Deputy-Speaker: We will see. Let him proceed.

Dr. Gaitonde: If I am given a few minutes more, it will be better.

Whatever my hon. friend has said goes exactly against what Ayurveda says. Ayurveda has nothing to do. according to the definition of Ayurveda itself, with what my hon. friend has said. I can give the definition of Ayurveda in Sanskrit if he wants, but for the benefit of others, I will give only a translation.

An Hon. Member: Give in both.

Dr. Gaitonde: In Sanskrit it is like this.

"हिताहितं सुखं दुःखं आयु स्तस्य हिताहितम् ।
मानैच तच्च यत्रोक्तं आयर्वेदःस उच्यते ।।"

That is the definition of Ayurveda, and I must remind my hon. friends that this stipulation is very similar to the definition given of health by WHO authorities. So, Ayurveda is as modern as modern science. When I say Ayurveda I am not talking of those who are defending Ayurveda today, but I am talking of Susruta, Waghbhatt and Charaka.

16.02 hrs.

[SHRI MULCHAND DUBE *in the Chair*]

This definition is that of Charaka. What happened subsequently is what has happened in the whole world. When the master dies, the disciples are very small men, and they kill the master in their own idea. That is what has exactly happened in Ayurveda. I have nothing against Ayurveda, but I have everything against those who have not understood Ayurveda at all, and call themselves Ayurvedists.

The definition of Ayurveda and the definition we give to modern medicine are the same. Not only this, I go beyond. The technique, the methods that we use today in medical sciences are very similar to those that were used or that have been asked to be used by the great masters of Ayurveda. They were not many, they were very few, but they were very big.

What is the meaning of scientific medicine? It is that medicine where scientific methodology is used. What is scientific methodology?—observation and experimentation. What does Ayurveda say? What do Susruta and Charaka say? They say there are three methods. The first is what my friend has said, but that is only one part of it, that is what the big, wise men have said. The second is *pratyaksha*, that is what you see, and the third is inference. It is true that they did not refer to experimentation proper, but I believe that if we interpret their way of thinking, experimentation is included in inference. But this was in the first or second century of this era. After that, nothing happened, and the *chelas* came who did not understand their masters.

Dr. L. M. Singhvi: That is always the case.

Dr. Gaitonde: He referred to Mahatma Gandhi. I would like to remind him that Mahatma Gandhi was operated upon by modern surgery, scientific surgery. That means he accepted it.

Dr. M. S. Aney (Nagpur): He submitted to it, not accepted it.

Dr. Gaitonde: Fortunately, an experienced person like Dr. Aney accepts it. I am happy.

Then what happened? I have to go a little into the history, because unless I go into the history, I cannot explain myself. So, you give me a little more time. I think this is such an important matter.

Dr. L. M. Singhvi: All doctors ought to have all the time they want.

Dr. Gaitonde: The history of medicine is very similar in India and abroad. Great men like Charaka and Susruta were followed by small men for some time, and confusion came. In India for many centuries nothing happened, because there can be no development of medical sciences unless there is development in other sciences also. You all know what happened even to our culture to which our friend referred. Our culture went down terrifically. Scientific methods were not known. and they only referred to one thing, that is the acceptance of the word of the wise, which was incorrect, because all these great, wise men, Indian and foreign, have taught us always the same thing: do not accept a thing because I tell you to accept it, you find out whether it is correct or not. That is why there were these two other methods, that is observation and experimentation.

There was no progress, and that is why we came under the foreigners. While this was happening in India, in other countries, other sciences developed, and with that naturally medicine also developed. What we doctors of scientific medicine are following today, philosophically speaking, are what Susruta and Charaka said. It is in this sense that I have put forth my amendment, and it is to substitute Allopathy and Ayurveda by scientific medicine.

There is some mistake and confusion about Allopathy. The word Allopathy was not coinel by the doctors of modern medicine. It was coined by Hahnemann in about 1840. It was coined by him to designate all other types of medicine which were not his. So, it is not an exaggeration to say that Ayurveda is also included in the term Allopathy according to his way of thinking. Allopathy is a word that is dead, it does not exist, because, in principle, according to him these people used to cure like with unlike material. That is, in Latin he used to say: *contraria contrariis curantur*. His principle was that like cures like: *similia similibus curantur*. He died very old, at 88 or so, I do not exactly remember his age.

Shri S. M. Banerjee: 98.

Dr. Gaitonde: He died in 1843. Three or four years before his death, when perhaps he was really not capable of clear thinking, this thing happened.

That is why I say let us discard Allopathy, let us discard Ayurvedic medicine as it is practised today, and let us call all these sciences medical sciences, scientific medicine. I believe that.... (*An Hon. Member:* What about homoeopathy?) We accept everything. Whenever we can observe and experiment, we accept the results of anything. If tomorrow my friend says that my speaking loud can cure many people here in the Parliament of something, well, we observe it and for a month we experiment it and then if it comes true, then it becomes part of medical science. When I say that ayurvedic medicine should be replaced by scientific medicine, it does not mean that I have any disregard for ayurvedic medicine. When we follow Einstein we do not discard Newton. We certainly have great respect for Newton. But facts prove that Einstein was right. It is the same way with regard to modern medicine. There are three methods that we use. If you wanted to know how they say it

in Sanskrit, it is worthwhile knowing it. We are not inventing it. Those who talk of ayurveda do not read the books. There were three methods mentioned. *Apthavakyam, prathyaksham* and *anumanam*. What happened with the degeneration that set in after the 4th or 5th or 10th century was that they heeded only *apthavakyam* but not *prathyaksham* or *anumanam*. I am saying this even in regard to politics. My request to all, as a scientist, is this: follow whatever our great people have said but remember also that *prathyaksham* and *anumanam* are very important.

श्री रामेश्वरानन्द (करनाल)

यः प्राण तो निमिषितो महित्वा
एवा इद राजा जगतो वमूव ।
य ईशे अस्य द्विपश्चतुष्पदः कस्मै देवाय
हविषा विधेम ।

सभापति महोदय, मैं आज इस प्रस्ताव के सम्बन्ध में अपने विचार रखना चाहता हूं । आयुर्जेविनं वेदपति प्रपयति शीत आयुर्वेद । आयुर्वेद शब्द का अर्थ है कि जो आयु को प्राप्त करा सके, जिसके द्वारा जिसके नियमों पर चल कर, जिसकी औषधि के द्वारा पूरी आयु मिल सकती हो । यह आयुर्वेद शब्द का अर्थ है ।

कुछ लोगों का विचार है कि आयुर्वेद वाले और कुछ नहीं जानते थे केवल कुछ दवा, गोली आदि के बारे में जानते थे । ऐसा नहीं है । आयुर्वेद के सुश्रुत आदि ग्रन्थों में शल्य चिकित्सा का विषय वर्तमान है । आप अभी भी उसे देख सकते हैं । ऐसी बात नहीं है कि उनको शरीर के इन स्थानों का पता नहीं था । आयुर्वेद में यहां तक है कि शरीर में कितनी बड़ी नाड़ियां हैं, कितनी छोटी नाड़ियां हैं, और कौन कौन धमनी क्या क्या काम करती है । ये सारी की सारी बातें आयुर्वेद में विद्यमान हैं । यद्यपि हजारों वर्ष से किसी ने आयुर्वेद को पूछा नहीं, लेकिन आज भी ऐसे वैद्य मौजूद हैं—कि अपना जीवन लगा रखा है । मंत्री महोदय या राष्ट्रपति तो उनके पास से या उनकी गली में से भी न निकले होंगे—जो अपनी विद्या से अच्छी तरह परिचित जीवित हैं । वे वैद्य आपकी नाड़ी पकड़ कर आपके शरीर के सारे रोग बता सकते हैं । क्या कोई ऐसा डाक्टर है जो यह चीज बता सकता है ?

दूसरी बात । आयुर्वेद में जहां पर दवाओं का वर्णन है वहां पर उसमें स्वस्थ रहने के नियम लिखे हैं । मैंने अपनी बहिन मंत्रिणी जी से पिछले दिनों कहा था कि जहां आप औषधियों का विधान करती हैं वहां स्वस्थ रहने के जो नियम हैं, व्यायाम, प्राणायाम, आसन, योग क्रियाएं , विस्त आदि जो कि आयुर्वेद में दी हैं, उनका भी प्रचार कीजिये । आपको जो कष्ट है वह इन नियमों पर चलने से तुरन्त समाप्त हो सकता है । किन्तु इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा ।

दूसरी चीज मैं यह कहना चाहता हूं कि दूसरे देशों की बनी हुई औषधि मेरे देश के लिए उपयोगी नहीं है क्योंकि वे देश शीत प्रधान हैं और उनकी औषधियां उष्ण हैं । मेरा देश उष्ण है । इसलिए इस देश की औषधि ही इस देश के लोगों के स्वास्थ्य के अनुकूल हो सकती है । इसलिए यहां उनका ही प्रचार व प्रसार होना चाहिए । विदेशी औषधि का यहां प्रभाव अच्छा नहीं होता । मैं यह नहीं कहता कि किसी देश की अच्छाई को हम न लें, अच्छाई को अवश्य लें । किन्तु अपनी विद्या न भूल जायें लेकिन इस देश की मिट्टी, इस देश के जल और इस देश की औषधि से हमारा शरीर बना है, इसी लिए औषधियां भी हमारे लिए यहीं की लाभदायक हो सकती हैं । जो औषधि लाभ नहीं करती वह हानि करती है । जो विदेशी औषधियां बाहर से बन कर आती हैं उन से अधिकांश लोगों को लाभ नहीं होता, हानि अवश्य हो जाती है ।

श्रीमती यशोदा रेड्डी (करनूल) : आयुर्वेद से आपकी आंख की ज्योति जो कम हो गई है वह तो ठीक नहीं हुई ।

श्री रामेश्वरानन्द : मैं ७२ वर्ष का हूं, तुम कल की छोकरी हो, मेरी ज्योति कम नहीं हुई है ।'

आयुर्वेद की औषधियों से अभूतपूर्व लाभ होता है । अभी कुछ दिन पहले मेरे मोच आ गई थी । डाक्टरों ने उस पर प्लास्टर रख दिया । मैं आपको सत्य कहता हूं कि १६ दिन तक वह प्लास्टर रखा रहा . . .

Shrimati Yashoda Reddy (Kurnool): I agree that I am younger but I would like to understand why your eye sight could not be cured with Ayurveda.

श्री रामेश्वरानन्द : और मेरा पैर एक अंगुल पतला हो गया । मैंने उसे खोल कर फेंका और अपनी औषधियों का प्रयोग किया और मेरा पैर धीरे धीरे ठीक हो रहा है ।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि आज डाक्टर लोगों के पास टीके बहुत आ गये हैं । जो भी रोग हो वे उसी में जहां भी कहीं चाहे वह टीका लगा देते हैं । मैं हरिद्वार मेले पर गया था । तो मुझे हैजे के नाम पर टीका लगा दिया गया । मैंने प्रार्थना की कि मुझे टीका न लगाया जाए, मुझे हैजा नहीं होगा, लेकिन टीका लगाया गया । उसका परिणाम यह हुआ कि मेरी बांह में १५-१६ दिन कष्ट रहा । हमको मालूम है कि हैजा किस प्रकार होता है ।

इसी तरह से आज चेचक के टीके की दशा ह । यह कितने जघन्य प्रकार से बनाया जाता है । यह पिछले दिनों मंत्राणी जी ने बताया था और यह प्रसिद्ध है कि बछड़े का रक्त, बछड़े की चरबी, बन्दर के गुरदे और अंडो से यह चेचक का टीका तैयार किया जाता है । मैं आपको कहना चाहता हूं कि चेचक के लिए आयुर्वेद में उपवास तथा खुब कला का पानी ही पर्याप्त है डाक्टर इसमें भी खाना देते हैं जो हानिप्रद है ।

स्वास्थ्य मंत्री (डा० सुशीला नायर) : माननीय सदस्य मेरा नाम ले कर कह रहे हैं । मैंने ऐसा नहीं कहा । वह गलत कह रहे हैं ।

श्री रामेश्वरानन्द : मैं आपको आपका छपा हुआ वक्तव्य दिखा दूंगा ।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि जो आयुर्वेद के विद्वान हैं उनको किसी जगह नहीं पूछा जाता । चाहे दवाखाना डाक्टर के बिना खाली पड़ा रहे या कम्पाउंडर उसको चलाता रहे लेकिन वैद्य चाहे वह आयुर्वेदाचार्य भी हो, उसको स्थान नहीं दिया जाता ।

मैं कहना चाहता हूं कि टिड्डी जहां रात को बस जाती है वहां जाते समय बड़े अंडे छोड़ जाती है । मैं तो समझता हूं कि इस सरकार के संचालक अंग्रेजों के अंडे हैं । इसलिए वह प्राचीन बातों को नहीं आने देना चाहते । यह स्पष्ट है । इन शब्दों के साथ मैं प्रस्ताव का समर्थक हूं ।

डा० गोविन्द दास (जबलपुर) : सभापति जी, मैं आयुर्वेद का बड़ा भारी समर्थक हूं । और समर्थन की ये भावनाएं मुझे अपने कुल की परम्परा से प्राप्त हुई है । लेकिन जहां तक ज्ञान का सम्बन्ध है मैं ज्ञान क्षेत्र के सभी दरवाजों को खुला रखना चाहता हूं ।

जिस समय चरक और सुश्रुत ग्रन्थ लिखे गये थे हजारों वर्ष उसको बीत गए । उसके बाद अब तक विज्ञान आगे नहीं बढ़ा है इसको मैं नहीं मानता । मैं यह मानने वाला हूं कि विज्ञान बराबर बढ़ता रहा है, आज भी बढ़ रहा है और आगे भी बढ़ता जायगा । इसीलिए श्री यशपालसिंह के इस

प्रस्ताव में जो कुछ सुधार हैं उन में से कुछ सुधारों को मैं उचित मानता हूं । एक सुधार श्री रणंजय सिंह का है जिन्होंने कि अपने सुधार में लिखा है :—

"Ayurvedic System of medicine be given preference to".

मैं समझता हूं कि जितने भी सुधार यहां पर पेश हुए हैं उन में यह सुधार सब से अच्छा है । आज भी यदि हम देखें तो इस देश में १०० में से ८० व्यक्ति गांवों में रहते हैं और गांवों में आज भी अधिकतर वैद्यों का ही इलाज होता है । यह सब होता है बिना राज्याश्रय के । यह सचमुच खेद की बात है कि स्वराज्य के बाद जो बात भी भारतीय है उसे राज्याश्रय प्राप्त नहीं हुआ । हमारी भाषाओं को राज्याश्रय प्राप्त नहीं हुआ । हमारी सांस्कृतिक चीजों को राज्याश्रय प्राप्त नहीं हुआ । आज भी गोवध हो रहा है । हमारी संस्कृति के विरुद्ध न जाने कितनी चीजें चल रही हैं । इसी प्रकार आयुर्वेदकि को भी राज्याश्रय प्राप्त नहीं हुआ है । जो हजारों वर्षों से एक औषधि पद्धति यहां पर चली आ रही थी और अनेक ऋषि मुनियों की तपस्या के पश्चात्, खोजों के पश्चात् जिन दवाइयों का निर्माण हुआ था, जो औषधियां आज भी मैं समझता हूं कि संसार की हर एक चिकित्सा पद्धति की औषधियों से ऊंची औषधियां हैं, उन औषधियों के निर्माण में सरकार ने नहीं के बराबर काम किया है । इसलिए मैं एक तरफ यह मानता हूं कि आयुर्वेद को एलोपैथी के ऊपर प्रश्रय मिलना चाहिए, उसी के साथ मैं यह भी मानता हूं कि वर्तमान विज्ञान जो आगे बढ़ा है उस विज्ञान की चीजें भी हमको अपनी चिकित्सा पद्धति में शामिल करनी चाहिए ।

जहां तक शल्य क्रिया का सम्बन्ध है, शल्य क्रिया हमारे यहां नहीं है । यदि हम चरक और सुश्रुत के अनुसार शल्य क्रिया स्थापित करना चाहें तो उसका करना सम्भव नहीं है । हमारे वहां उस समय एक्सरे नहीं था और न अन्य दूसरा सम्बंधित सामान ही था जो कि विज्ञान ने आज हमारे सामने रक्खा है । इसलिए जहां मैं एक ओर आयुर्वेद का समर्थक हूं और चाहता हूं कि आयुर्वेद को एलोपैथी और दूसरी चिकित्सा पद्धतियों के ऊपर प्रश्रय दिया जाय वहां मैं इस पक्ष का भी हूं कि वर्तमान विज्ञान ने जिन चीजों की खोज की है उन चीजों को भी हम ले लें और अपने देश का जो वायु मंडल है, जो दूसरी चीजें हैं उसके अनुसार और उन नवीन खोजों के अनुसार भी हम काम करें । मुझे खेद इस बात का है कि सरकार हमारी सरकार होते हुए भी और भारतीय सरकार होते हुए भी भारतीय चीजों को वह प्रश्रय नहीं दे रही है । राज्याश्रय की इन सब चीजों में नितान्त आवश्यकता है । इसलिए वहां जो कुछ सुधार पेश हुए हैं जिसमें मैंने आपसे कहा कि श्री रणंजय सिंह का जो सुझाव है उसको मैं सब से महत्वपूर्ण मानता हूं । हमारी एलोपैथी, होम्योपैथी, जितनी भी चिकित्सा पद्धतियां हैं उन से कोई बैर नहीं है, उन से हमारी कोई शत्रुता नहीं है । हम चाहते हैं कि सब की जांच की जाय और जहां तक औषधियों का सम्बन्ध है मेरा अभी भी मत है कि आयुर्वेदिक औषधियां सब से अच्छी औषधियां हैं । उन औषधियों को हमें प्रश्रय देना चाहिये । इस सम्बन्ध में खोज होनी चाहिये और आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को सर्वोपरि मान कर इस देश के वायु-मंडल और इस देश की संस्कृति, इन सब चीजों के अनुकूल मान कर उसे राज्याश्रय प्राप्त होना चाहिए । साथ ही जो विज्ञान की चीजें हैं उन्हें भी हमें शामिल करना चाहिए । इसलिए मैं इस प्रस्ताव का जो आश्रय है उससे सहमत होते हुए भी इस प्रस्ताव पर के सुधारों से अधिक सहमत हूं वनिस्बत प्रस्ताव के ।

•

डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी (जोधपुर) : सभापति महोदय, मुझे खेद है कि मैं अपने मित्र श्री यशपाल सिंह के प्रस्ताव से सहमत नहीं हूं । यद्यपि यह सही है कि आयुर्वद

[डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी]

के लिए यह बहुत आवश्यक है कि उसे बराबर राज्याश्रय प्राप्त होता रहे, मैं इसे अनिवार्य समझता हूं कि आयुर्वेद को अधिकाधिक गति मिलती रहे किन्तु मैं इस बात को स्वीकार नहीं कर सकता कि सर्वथा और सामान्यतया आयुर्वेद को, आज जो एलोपैथी को प्रोत्साहन मिल रहा है, वह आयुर्वेद को मिल जाय । वैसे वास्तव में डा० गायतोंडे ने जो कहा वह सही है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण में कोई राष्ट्रीय भेद और सीमाएं नहीं होतीं । सारा विज्ञान एक है और उसमें यह कहना कि यह हिन्दुस्तानी विज्ञान है या भारतीय विज्ञान है और दूसरा पाश्चात्य विज्ञान है यह वास्तव में सही नहीं होगा । हमारे पूर्वजों ने वास्तव में ऐसी परम्परा स्थापित की थी । हमारे पूर्वजों ने वास्तव में इस प्रकार के नये अन्वेषण किये थे जिनके लिए कि हम गर्व अनुभव कर सकते हैं । किन्तु इसका यह तात्पर्य यह नहीं है कि आज के युग में वर्त्तमान अन्वेषणों को छोड़ कर, वर्त्तमान छानबीन के परिणामों को छोड़ कर हम केवल उसी पुरानी चीज का और उसी पुरानी परम्परा का ही राग अलापते रहें । मैं इस बात से तो सहानुभूति रखता हूं कि हम पुरानी परम्परा में जहां-जहां रत्न छिपे हैं, जहां जहां मूल्यवान वस्तुएं हैं, उन्हें स्थान दिया जाय, उन की पुनरावृत्ति हमारे ही देश की परम्परा में की जाय किन्तु हम यह स्वीकार नहीं कर सकते कि आमूल चूल परिवर्तन करते हुए जो आधुनिक विज्ञान है उसका स्थान हमारी यह पुरानी परम्पराएं ले लें जिनको विकास और प्रगति का वास्तव में अवसर ही नहीं मिला ।

मेरे मित्र श्री यशपाल सिंह ने कई सारे आंकड़े इस सदन के समक्ष प्रस्तुत किये । वास्तव में यह बात सही है कि जैसा कि उन्होंने कहा कि आयुर्वेद पर जो व्यय होता है यह बहुत ही कम मात्रा में होता है । अगर आंकड़ों के हिसाब से देखा जाय तो वह नगण्य व्यय है लेकिन साथ ही यह देखने की भी बात है कि इन वर्षों में हमारी सरकार ने बराबर इस बात का प्रयत्न किया है कि आयुर्वेदिक पर अधिकाधिक व्यय किया जाता रहे । यह दूसरी बात है कि प्रगति उतनी सन्तोषजनक नहीं हुई । यह दूसरी बात है कि आयुर्वेद को अभी तक भी वह स्थान नहीं मिल सका जो उसके लिए उचित है । मैं आशा करता हूं कि हमारी सरकार इस बात का भरसक प्रयत्न करेगी और इस बात की पूरी चेष्टा करेगी कि आयुर्वेद का जो दृष्टिकोण है, आयुर्वेद की जो देन है वह आधुनिक विज्ञान के प्रवाह में खो न जाय बल्कि उसका समुचित उपयोग किया जा सके । इन शब्दों के साथ मैं अपने द्वारा प्रस्तुत संशोधन का समर्थन करता हूं और आशा करता हूं कि सदन उस संशोधन को स्वीकार करेगा ।

श्री रणंजय सिंह (मुसाफ़िरखाना) माननीय सभापति महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे कुछ निवेदन करने का समय दिया ।

मैं आप के द्वारा माननीय सदस्य, श्री यशपाल सिंह, को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने ऐसा आवश्यक और महत्वपूर्ण विषय यहां पर प्रस्तुत किया है । जैसा कि स्पष्ट है, "आयुर्वेद" के शाब्दिक अर्थ हैं "साइंस आफ लाइफ" । आयुर्वेद आज से नहीं, प्राचीन काल से, अपितु कहना चाहिए कि आदि-काल से चला आ रहा है, जिसके अन्तर्गत बहुत से और कई प्रकार के अनुभव प्राप्त किये गये । यदि निष्पक्ष दृष्टि से मनन और अध्ययन किया जाये, तो पता लगेगा कि चिकित्सा सम्बन्धी विज्ञान जितना हमको आयुर्वेद में मिलता है उतना अन्यत्र कहीं नहीं मिलता है । चिकित्सा के क्षेत्र में इस समय भी खोजें हो रही हैं और खोज करते

करते आगे बढ़ा जा रहा है । जैसा कि माननीय सदस्य ने अभी कहा है, आयुर्वेद पद्धति की ओर ही बढ़ा जा रहा है और उसी को अपनाया जा रहा है । नाम और शब्द चाहे कुछ हों, लेकिन वास्तव में उसी ओर बढ़ा जा रहा है, जो कि आदि काल से हमारे यहां चली आ रही है और जिसका इतना महत्व रहा है ।

जो प्रस्ताव सदन के सामने प्रस्तुत है, मैंने उसमें यह संशोधन रखा है कि एलोपैथिक सिस्टम आफ मेडिसन की अपेक्षा आयुर्वेदिक सिस्टम आफ मेडिसन को प्रफ़रेंस दी जाये । मूल प्रस्ताव में यह मांग की गई है कि एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति को हटा कर केवल आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को रख दिया जाये । मैं समझता हूं कि यह कुछ व्यावहारिक नहीं है कि एकदम से ऐसा कर दिया जाये । इसलिए मेरे विचार में वर्तमान समय में मूल प्रस्ताव को इस संशोधन के साथ स्वीकार कर लिया जाये, जो कि मैंने उपस्थित किया है । जैसा कि माननीय सदस्य, डा० गोविन्द दास ने कहा है, तब वह प्रैक्टिकेबल होगा, व्यावहारिक होगा और उसके द्वारा आयुर्वेद की उन्नति उत्तरोत्तर होती रहेगी तथा उससे जनता का भी लाभ होगा । यदि सरकार पूरा ध्यान देगी, तो शीघ्र ही आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति इस देश में अपना उचित स्थान प्राप्त कर लेगी ।

मैं यह भी कहना चाहता हूं कि जो विज्ञान की बातें हो रही हैं, वे सब आयुर्वेद में भरी हुई हैं । बहुत से लोगों की धारणा है कि जो बहुत से नये नये रोग आ रहे हैं, आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में उनका कोई उल्लेख या निराकरण नहीं है । उदाहरण के लिए ब्लड प्रेशर के रोग को लीजिए । हमारे यहां उसका अर्थ लगाया गया है "रक्त-चाप"—'ब्लड' का अर्थ है "रक्त" और "प्रेशर" का अर्थ है "चाप" । इस प्रकार से "ब्लड-प्रेशर" का शब्दार्थ किया गया है । किन्तु यह नहीं देखा गया है कि जितने भी रोग हैं, आयुर्वेद में उन सब के सम्बन्ध में विचार किया गया है और उनके निदान दिये गये हैं । सुश्रुत और चरक आदि ग्रन्थों में उनके लक्षण मिलते हैं । "हाई ब्लड-प्रेशर" को "शिरा स्थौल्य" और "लो ब्लड-प्रेशर" को "शिरा शैथिल्य" कहा गया है, अर्थात् यदि शिराओं में स्थौल्य आ जाये, तो हाई ब्लड-प्रेशर हो जाता है और यदि शिराओं में शैथिल्य आ जाये, तो लो ब्लड-प्रेशर हो जाता है । इस प्रकार कोई ऐसा रोग नहीं है, जो कि आयुर्वेद से अच्छा न किया जा सकता हो ।

मेरा विश्वास और अनुभव है कि जितना लाभ आयुर्वेदिक चिकित्सा-पद्धति से होता है, उतना एलोपैथिक चिकित्सा-पद्धति से नहीं होता है, यदि चिकित्सक अच्छा हो, क्योंकि चिकित्सा तभी अच्छी तरह हो सकती है, यदि डाक्टर या वैद्य अच्छा हो । इसलिए यदि आयुर्वेद को बराबर प्रश्रय मिलता रहे, तो वह समय आयेगा, जब कि हमारा यह आयुर्वेद संसार के लिए कल्याणकारी सिद्ध होगा ।

हमारे यहां कहा गया है, "शरीरमाद्यम् खलु धर्म साधनम् ।" हम सब को धर्म के साधन के रूप में शरीर की रक्षा करनी है शरीर की रक्षा करते हुए ही हम सब कार्य सफलतापूर्वक कर सकते हैं और शरीर के लिए आयुर्वेद की पद्धति जितनी उपयोगी सिद्ध हो सकती है, उतनी दूसरी कोई पद्धिति नहीं हो सकती है ।

मैंने यह भी संशोधन रखा है कि "बि रीप्लेस्ड बाई दि आयुर्वेदिक सिस्टम" के स्थान पर "एंड पर्टिकुलर्ली एन्फ़ोर्स्ड" शब्द रख दिये जायें ।

मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इस विषय में हमको निष्पक्ष रूप से विचार करना चाहिए । सत्य को ग्रहण करते हुए असत्य का त्याग करने के लिए सदा उद्यत रहना चाहिए । यह बड़ा उत्तम नियम है और हम सबको इसे मानना चाहिए ।

माननीय सदस्य, श्री यशपाल सिंह,

[श्री रणजय सिंह]

के विचारों की प्रशंसा करते हुए में कहना चाहता हूं कि उन्होंने बहुत उत्तम और महत्वपूर्ण विषय इस सदन में उपस्थित किया है ।

इन शब्दों के साथ मैं अपने संशोधन को सदन के सामने उपस्थित करता हूं । धन्यवाद ।

Shri D. N. Tiwary (Gopalganj): Mr. Chairman, Sir,... (*Interruptions*).

कुछ माननीय सदस्य : हिन्दी में बोलिये ।

श्री राम सेवक यादव : माननीय सदस्य आयुर्वेद की वकालत करेंगे और अंग्रेजी में करेंगे । (*Interruption*).

श्री द्वा० ना० तिवारी : मंत्री महोदय हिन्दी नहीं समझते ।

श्री बागड़ी (हिसार) सब समझ लेंगे । सब जानते हैं कि माननीय सदस्य अंग्रेजी जानते हैं ।

श्री च० का० भट्टाचार्य (रायगंज) माननीय सदस्य आयुर्वेद के बारे में संस्कृत में बोलें । (*Interruptions*).

श्री द्वा० ना० तिवारी : मंत्री महोदय हिन्दी नहीं जानते, इस लिये मैं अंग्रेजी में बोल रहा हूं ।

कुछ माननीय सदस्य : जानते हैं । (*Interruptions*).

श्री द्वा० ना० तिवारी : जानते हैं ? बहुत अच्छा ।

सभापति महोदय, आयुर्वेद के साथ सरकार के व्यवहार का अध्याय बहुत ही दर्दनाक है । यह नहीं कि कांग्रेस में ने इस पर तवज्जह नहीं दी थी । १९२० में जब नान-को-आपरेशन का ऐतिहासिक प्रस्ताव पास हो रहा था, उस समय भी कांग्रेस ने इस आशय का प्रस्ताव पास किया था कि आयुर्वेद की तरफ हमारा ध्यान जाना चाहिये । १९३८ में भी उस प्रस्ताव को दोहराया गया ।

श्री काशी राम गुप्त : उस वक्त वह सरकारी कांग्रेस नहीं थी ।

श्री द्वा० ना० तिवारी: लेकिन १९४६ से ले कर आजतक आयुवद के साथ जो व्यवहार हुआ, वह वहुत ही दर्दनाक ही नहीं शर्मनाक कहा जायगा । उस के साथ विमाता जैसा अर्थात् स्टेप-मदरली ट्रीटमेंट किया गया है ।

आप जानते हैं कि आयुर्वेद के बारे में जितने कमीशन्ज़ और कमेटीज़ बिठाई गई, उन में आयुर्वेद के विशारद नहीं, बल्कि अंग्रेजी डाक्टर ही केवल रखे गये । यह अजीब तमाशा है कि विचार तो करना है आयुर्वेद के सम्बन्ध में, लेकिन उन कमीशन्ज या कमेटीज़ के सभापति या चेयरमैन बनाये जाते थे एलोपैथी के विद्वान । पहले पहल भोर कमेटी को स्थापित किया गया था । उस कमेटी ने लिखा था कि समय न होने कारण हम इस विषय में गये नहीं, इस लिये हम इस विषय में कोई रिपोर्ट नहीं कर सकते । इस के बाद चोपड़ा कमेटी आई । उस ने अपनी रीकमेंडेशनज़ दी, जो कि बहुत फार-रीचिंग थी । उन में इन्टेग्रेटिड कोर्स की चर्चा की गई थी । शायद गवर्नमेंट को उन रीकमेंडेशन्ज़ को नहीं मानना था, इस लिये एक पंडित कमेटी बिठाई गई । पंडित नाम था एक व्यक्ति का और वह भी डाक्टर थे । उस कमेटी ने भी अपनी रिपोर्ट दी । जब उस पर भी तसल्ली नहीं हुई, तो देव कमेटी बिठाई गई । यानी आयुर्वेद के बारे में कमेटियों का एक तांता सा लग गया । चूंकि इस तरफ अधिक तवज्जह नहीं देनी थी, इस लिये केवल कमेटियां बिठाई गईं ।

पहली स्वास्थ्य मंत्री, राजकुमारी अमृत-कौर, का यह विश्वास था कि आयुर्वेद तो कोई साइंस ही नहीं है । कई बार उन्होंने अपना यह विचार व्यक्त किया और जब प्रोटेस्ट हुआ, तो उन्होंने उस को वापिस

लिया । उन्होंने भी इन्टेग्रेटिड कोर्स की बात कही थी । उस के बाद करमरकर साहब ने भी उसी पद्धति पर चलना शुरू किया ।

इस के अतिरिक्त गवर्नमेंट आफ इंडिया के जो आयुर्वेद के एडवाइजर होते हैं, वे ऐसे व्यक्ति होते हैं, जिन का एलोपैथी की तरफ ज्यादा और आयुर्वेद की तरफ कम ध्यान होता है । वे ऐसा गोल-माल करना चाहते हैं, जिस से आयुर्वेद की तरक्की न हो । अभी हाल में महाबलेश्वर में एक कांफ्रेंस हुई, जिस में सब स्टेट्स के मंत्रीगण आये हुये थे । वहां पर यह निश्चय हुआ कि अब इन्टेग्रेटिड कोर्स छोड़ दिया जाये और अब शुद्ध आयुर्वेद पढ़ाया जाये ।

मैं निवेदन करना चाहता हूं कि सोलह वर्ष तक इन्टेग्रेटिड कोर्स की चर्चा कर के अब उस को छोड़ा जा रहा है । ऐसी स्थिति में आयुवद की तरक्की कैसे हो ? सरकार केवल कमीशन्ज़ और कमेटीज़ बिठाये जा रही है, लेकिन वह उन की सिफारिशों पर अमल नहीं करती है । महाबलेश्वर में यह कहा गया कि चूंकि इन्टेग्रेटिड कोर्स की योजना सफल नहीं हुई, इस लिये केवल शुद्ध आयुर्वेद पढ़ाया जाये । इस का अर्थ तो यह हुआ कि आयुर्वेद के छात्रों और चिकित्सकों को साईंस का ज्ञान न होने दिया जाये । उन्होंने यहां तक फैसला लिया है कि आयुर्वेद के छात्रों और चिकित्सकों को थर्मामीटर टच न करने दिया जाये, थर्मामीटर न छूने दिया जाये, उन को स्टेथोस्कोप न लगाने दिया जाये, नवीन पद्धति के अनुसार जांच करने का उन को कोई अख्त्यार न रह जाये । क्या इस से दर्दनाक या शर्मनाक कोई बात हो सकती है ।

बहुत से माननीय सदस्यों ने कहा कि साइंस बढ़ रही है । प्रश्न यह है कि क्या साइंस का ज्ञान केवल कुछ लोगों तक सीमित रहना चाहिये या उस की छटा चारों तरफ फैलनी चाहिये । क्या आयुर्वेद की प्रैक्टिस करने वाले, आयुर्वेद को जानने वाले, पेरियाह या अछूत हैं कि वे इस को प्राप्त न कर सकें? मैं माननीय स्वास्थ्य मंत्री से कहना चाहता हूं कि महाबलेश्वर में उन्होंने जो फैसला लिया है, उस से खराब कोई फैसला नहीं हो सकता है । मैं कहूंगा कि उस फैसले को रद्द किया जाये और आयुर्वेद के इन्टेग्रेटिड कोर्स को समाप्त न किया जाये, जिस से आयुर्वेद वालों को माड्रन साइंस का फायदा मिलता है । आयुर्वेद के साथ व्यवहार कैसा होता है । पोस्ट ग्रेजुएट ट्रेनिंग आयुर्वेद में दी जाती है और अगर कोई इसको पूरा कर लेता है तो जब वह नौकरी की तलाश में जाता है तो कह दिया जाता है कि आपको नौकरी नहीं दी जा सकती है । लेकिन अगर कोई एम बी० बी० एस० पास कर लेता है तो उसको बड़ी आसानी से दो सौ चार सौ या पांच सौ की नौकरी मिल जाती है । ऐसी हालत में किस तरह स आयर्वेदीय पद्धति फल फूल सकती है ।

हमारे गोआ के भाई ने कहा है कि इस बीच में, पिछले सैकड़ी बरसों में आयुर्वेदी में कोई रिसर्च नहीं हुआ है, कुछ भी नहीं हुआ है । मैं उन से पूछना चाहता हूं कि वह हो भी कैसे सकता था ? राज्यसत्ता ने कभी कोई प्रश्रय अंग्रेजों के जमाने में से इसको नहीं दिया । कई सो बरसों से इस पर आक्रमण पर आक्रमण होते आये हैं । जिन लोगों का भारत पर राज्य रहा है, उन्होंने इस सिस्टम को खत्म करने की कोशिश की है । १८२७ में अंग्रेजों ने भी एक स्कूल कलकत्ते में पहले पहले आयुर्वेद का खोला था लेकिन वहां पर उनको साइंस पढ़ने नहीं दी, इस लिये उसको बन्द कर देना पड़ा । ऐसी हालत में कैसे यह सिस्टम बढ़ सकता है, कैसे फल फूल सकता है ।

मैं माननीय मंत्री जी से एक बात कहना चाहता हूं । नार्थ एवेन्यू में या साउथ एवेन्यू में सिद्धांततः यह मान लिया गया था कि आयुर्वेदीय का एक अस्पताल खोला जाये ।

[श्री द्वा० ना० तिवारी]

अप्रैल में यह तय हुआ लेकिन आज तक मकान ही नहीं मिल सका है कि जिस में अस्पताल खोला जा सके । पैसा ही नहीं दिया गया है । बहुत मुश्किल से जामनगर में एक आल-इंडिया रिसर्च की इंस्टीट्यूट कायम हुई है गवर्नमेंट आफ इंडिया की तरफ से । उसको भी बन्द करने की बात सोची जा रही है, सोचा जा रहा है कि कमेटी के सुपुर्द उसको कर दिया जाये । इस पर साठ-सतर लाख खर्च होता है और इसका आल इंडिया कारेक्टर है, दूसरे प्रांतों से भी लोग वहां जा कर पढ़ते है । लेकिन उसके कारेक्टर को खराब किया जा रहा है । उसको कहा जा रहा है कि कमेटी के हाथ में सौंप दिया जाये । वह कमेटी किसी एक स्टेट की होगी और उसको स्टेट की यूनीवर्स्टी के साथ जोड़ दिया जायेगा । तब आप अंदाजा लगा सकते हैं कि कैसे उसका आल इंडिया कारेक्टर रहेगा, कैसे भारत के अन्य भागों से लड़के वहा जा कर शिक्षा हासिल करेंगे ।

मैं चाहता हूं कि आयुर्वेद के साथ सौतेले बच्चे का सा व्यवहार न किया जाये । इस पर प्रांतों में कितना पैसा खर्च होता है, इसके आंकड़े कुछ माननीय सदस्यों ने आपके सामने रखे हैं । कहीं पर एक पैसा कहीं पर दो पैसा और कहीं दस पैसा खर्च होता है । यह शर्मनाक बात है । मेरे पास भी फिगर्ज हैं लेकिन मैं देना नहीं चाहता हूं चूंकि समय नहीं है । आप चाहते हैं कि आयुर्वेदी को एलोपेथी के मुकाबिले में ला कर खड़ा कर दिया जाये । यह भी हो सकता है, यह कोई मुश्किल बात नहीं है । मैं पूछना चाहता हूं कि आप दो चार दस दिन एक आदमी को भर पेट खाने को न दीजिये, और दूसरे आदमी को पूरी सहूलियतें दीजिये, उसको प्रोत्साहन दीजिये । तो मुकाबिला कैसे हो सकता है । लेकिन यहां पर तो सैकड़ों बरस से यही होता आ रहा है कि आयुर्वेद के तरफ कम ध्यान दिया जाये, इसको खत्म किया जाये । मार्डन साइंस अच्छी है या आयुर्वेद इसका मैं आपको उदाहरण देना चाहता हूं । मैं आपको अपना निजी अनुभव सुनाना चाहता हूं । मैं तमाम दिल्ली, कलकत्ता इत्यादि में इलाज करा कर कर हार गया लेकिन अच्छा नहीं हुआ । जामनगर में जा कर मैं कुछ दिन रहा, वहां की दवा से अच्छा हो गया । मेरा ग्रैंडसन पोलियो की बीमारी से पीड़ित था, तमाम पटना दिल्ली इत्यादि में उसको ले गया, जहां पर कहीं पर उसका इलाज होता है, वहां भी ले गया लेकिन अच्छो नही हुआ । जामनगर में जा कर अच्छा हो गया ।

मैं गवर्नमेंट की पालिसी को लेता हूं । हमारे प्रधान मंत्री जी लंका गये थे । उन्होंने वहां पर आयुर्वेदीय अस्पताल का उद्घाटन किया । उस वक्त उन्होंने कहा कि मार्डन साइंस का नालेज आयुर्वेद वालों को होना ही चाहिये । मगर यहां पर कहा जाता है कि नहीं, नहीं होना चाहिये । उनको थर्मामीटर नहीं छूने देना चाहिये । उनको स्टेथास्कोप छूने दी जानी चाहिये । जब आप इस सिस्टेम को प्रफरेंस देंगे, उनको मार्डन ज्ञान देंग तो आपको पता चल जायगा कि आयुर्वेद अच्छा है या खराब है । जो लड़का आयुर्वेद में निकलता है, उसको कुछ एनकरेजमेंट दीजिये । लेकिन आज तो डिसकरेज किया जाता है । आज तो उनको अंधकार में रखा जाता है । संस्कृत विद्या बड़ी अच्छी चीज है, यह सभी कहते हैं । लेकिन इसकी पूछ कम हो गई है क्योंकि राज्य की ओर से इसको प्रोत्सहान नहीं मिलता है, जो पढ़ लिख जाते हैं, उनको वेतन कम मिलता है और उन सब कारणों से इसको कोई नहीं पढ़ता । मैं आपसे कहूंगा कि आप इस विषय पर गम्भीरता से विचार करें, सहानुभति पूर्वक विचार करें । अगर आपने ऐसा किया तो आयुर्वेद को प्रोत्साहन मिल सकता है, इसको इसका उचित स्थान दिलाने में सहायता मिल सकती है ।

Shri B. K. Das (Contai): Mr. Chairman, Sir, it has always been said by the Government that they would take steps for development of ayurved, and the previous speaker mentioned that they had appointed several committees and had done something for ayurved. It has never been contemplated that allopathic medicine would be completely replaced by ayurved. But the Chopra Committee reported that there would be an integrated system or a unified system. Now the Central Council have recently reported that they would go in for *shuddh* ayurved and not for the integrated system because that has proved a failure. I am not competent enough to pronounce any judgment over that but, whatever the decision is, it is regrettable that the Government has not been able to make up its mind as yet.

The only worthmentioning thing that has been done so far is the establishment of the research institute at Jamnagar and some arrangement for education of ayurvedic physicians there. So far only about 70 students have come out of that institution, and we do not know much of the results that have come out of the research work that has been done there. However, if the Government is serious about development and rejuvenation of ayurved, some vigorous steps must be taken, and my grouse is that during these 15 years only lip-sympathy has been paid to ayurved and no serious steps have been taken.

There are many ayurved practitioners in the rural areas. In urban areas also there are some who are renowned vaidyas. They are able to stand on their own legs. Because of the efficacy of their treatment and the fame they have been able to earn for themselves they attract patients from different parts of the country. But if we compare what encouragment and help, financial and otherwise, are being given to allopathic medicine and allopathic system and what is being given to the ayurvedic system, we find that it almost comes to nil.

I am connected with a small ayurvedic school, and that school is almost in a dying condition because of paucity of funds. The students there are appearing at the faculty examination and getting diplomas. But when they come out properly qualified according to the standards that have been laid down there by the State Government, they are almost helpless. They are unable to stand on their own legs and they go to the rural areas. We hear of a scheme or arrangement for rural treatment. If these qualified ayurvedic practitioners who come out of ayurvedic schools are given some sort of a subsidy—we hear that doctors will be given some subsidy or some allowance for their practice in rural areas —they can stand on treir own legs and work in the rural areas. Why could the Ayurvedic practitioners not be given that help so that they can stand on their own legs? Now they have no status. When a student after passing the intermediate examination and doing a five years' course in the medical college comes out he comes out with self-confidence that he has some status in the country, he comes out with the confidence that he will not be helpless in earning his livelihood. But after five years of study in an Ayurvedic college when a student comes out, he finds himself helpless. Therefore, talented students are not being attracted to this line.

We want research in Ayurved to be successful. But if talents are not attracted, if they go to other lines, how can it be successful? When they find there is honour, prestige and money in allopathic practice, why should they go in for this system? Why should they get themselves admitted in the Ayurvedic colleges? The Central Government have been doing many things for the improvement of the allopathic system. Could not a Central Institute for Ayurved be established in the city of Delhi to

[Shri B. K. Das]

set a standard before the country so that that standard might be followed in curriculum and training by other institutions?

The Third Plan has laid down certain schemes like that there should be a directorate, there should be a Central Council for Indian Medicine and so on. None of these steps has so far been taken. The meagre money that has been spent and the meagre steps that have been taken for the development of this system have produced very meagre results. Therefore, I have ventured to say in my amendment that if Government are serious, they must take these things seriously, proper help and encouragement should be given, proper status should be given to the Ayurvedic practitioners and all necessary steps should be taken so that what little is being done in the States may be done properly and with a view to develop Ayurved on proper lines so that Ayurved gets an honoured place in the country.

स्वास्थ्य मंत्री (डा० सुशीला नायर) : सभापति महोदय, आखीर में डिप्टी मिनिस्टर साहब जवाब देंगे, मगर आप की आज्ञा से मैं दो चार शब्द इस समय कहना चाहती हूं क्योंकि सवा पांच बजे मुझे एक कमेटी में जाना है ? मैं दो तीन बातों की तरफ आपका ध्यान दिलाना उचित समझती हूं ।

पहली बात तो यह है कि अगर हमें सत्य की तलाश करनी है तो सत्य की लतलाश बुद्धि से होगी भावना से नहीं ।

एक माननीय सदस्य : दोनों से होगी ।

डा० सुशीला नायर : सत्य की तलाश कभी भावना से नहीं होती, है, ज्ञान की तलाश कभी भावना से नहीं होती है, ज्ञान की तलाश हमेशा बुद्धि से होती है ।

श्री बागड़ी : भावना के बगैर बुद्धि बनती ही नहीं । पहले भावना बनती है फिर तलाश बनती है ।

डा० सुशीला नायर : ज्ञान आज तक किसी ने भावना से खोजा ही नहीं है । ज्ञान की खोज हमेशा बुद्धि से होती है और बुद्धि से होगी । अगर ज्ञान की शोध में भावना को प्रधान स्थान दिया जायेगा तो ज्ञान का लोप हो जायेगा और भावना उस का स्थनि ले लेगी । यह पहली बात है ।

अब मैं दूसरी बात कहना चाहती हूं । हम लोग तो अयूर्वेद की यथाशक्ति शोध करने की कोशिश कर रहे हैं । अगर वह हम को उपयोगी ज्ञान आयुर्वेद से मिल सकता है या किसी भी और तरीके से,तो हम उसे लना चाहते हैं । क्या यह हम को अच्छा नहीं लगता कि हम सारी दुनिया के अन्दर सिर ऊंचा कर के कहें कि हमार वुजुर्गों में यह यह शोधें की थी ?

अभी जो यहां पर आर्थ्रेलमालोजी की कांग्रेस हुई थी उस में सारी दुनिया के लोग इकट्ठे हुये थे । हम ने वहां यह कहा कि सुश्रुति के जमाने में लोग आंख के लेंस को सुई डाल कर फोड़ दिया करते थे । उस के बाद सर्जरी बढ़ी, नयें तरीके निकले । अब लेंस निकाल दिया जाता है । सुश्रुति के जमाने में जब लेंस फोड़ दिया करते थे तब १०० में से शायद ९९ आखें चली जाती थीं और एक ठीक हो जाती थी भाग्यवश । लेकिन नई सर्जरी के द्वारा९९ आंखें ठीक हो जाती हैं और एक आध दुर्भाग्यवश खराब भी जाती हैं ।

इस लिये मैं यह कहना चाहती हूं कि हम में से किसी का यह ध्येय नहीं है कि हम यह कहें कि आयुर्वेद में कुछ नहीं है या किसी और तरीके में बहुत कुछ पड़ा है । कहने का अर्थ यह है कि अव्वल तो एलोपैथिक कोई चीज नहीं है । यह जो नाम दिया गया है और उसके सम्बन्ध में रेजोल्यूशन रक्खा गया है उस की भाषा भ्रम पैदा करनी है । जैसा अभी हमारे भाई डा० गायतोंड ने बतलाया, डा० हैनिमन जो कि होमियोपैथिक सिस्टम के जन्मदाता थे, उन्होंने यह शब्द ऐलोपैथिक

निकाला । उस से पहले ऐलोपैथिक नाम हो नहीं था । डा० हैनिमन ने बतलाया कि समान असर पैदा करने वाली दवा से जिस रोग का निराकरण होता है उसको होमियोपैथिक प्रिंसिपल कहते हैं और विरोधी असर पदा करने वाली दवा से जो दर्द ठीक होता है, मर्ज ठीक होता है, उस को ऐलोपैथिक प्रिंसिपल कहते हैं । जैसे जैसे समय जाता है हर एक क्षेत्र में विकास होता है । इस तरह से शरीर चिकित्सा का भी विकास हुआ ।

Shri Balakrishnan (Koilpatti): May I request the Health Minister to speak in English so that we can follow?

Dr. Sushila Nayar: I am sorry. Many hon. Members have spoken in Hindi on the subject. Further, the subject can be more appropriately dealt with in Hindi. Therefore, my hon. friend may try to understand it from some of his friends, if he likes. Or, I will explain it to him myself afterwards. मैं निवेदन कर रही थी कि शरीर चिकित्सा का भी सारे विज्ञान के साथ विकास हुआ । उस विकास में सामान्य साइंस के विकास का एक बहुत बड़ा हाथ रहा । मिसाल के तौर पर कोई आदमी शीशे को ले कर रगड़ता रहा, रगड़ता रहा । सारी जिन्दगी उस ने उस लेंस को रगड़ने में लगा दी । नतीजा यह हुआ कि माइक्रासकोप का अविष्कार हुआ और माइक्रास्कोप का आविष्कार होने से जो कुछ हम कभी नहीं देख सकते थे, मर्ज के जन्तु आदि, उनको हम देखने लगे । खाली नब्ज देख कर निदान करने की जगह पर नये निदान के तरीके हाथ में आ गये रक्त बिन्दु हम उस शीशे के नीचे देखने लगे, पाखाने का जरा सा टुकड़ा उस के नीचे देखने लगे और पेशाब भी उसी तरह देखने लगे । सब प्रकार की बिमारियों का निदान करने के लिये परीक्षण के यह नये साधन हमारे हाथ में आ गये और निदान के नये रास्ते बन गये । उस से पहले शरीर चिकित्सा के लिये निदान के तरीकों में निरीक्षण करना, नब्ज देखना या छाती वाती टटोलना, पेट टटोलना यह तरीके थे । दूसरे तरीके नहीं थे । आप ने सुना ही होगा ग्रीस में थ्री ह्यमर्स या ४ ह्यूमर्स कहे जाते थे, मैं ठीक संख्या भूल गई हूं, उसी तरह से हमारे यहां त्रिदोष थे । त्रिदोष में महानता है । वह ग्रीक ह्यूमर्स की निस्बत ज्यादा व्यापक है । मैं यह मानती हूं कि वह विज्ञान ज्यादा बढ़ा हुआ था । लेकिन जिस तरह से पश्चिम में विज्ञान में बढ़ोत्तरी होती गई उसी तरह से चिकित्सा के तरीकों में बढ़ोत्तरी होती गई ।

मैंने आप से लेंस की बात कही । अब जरा आगे चलिये तो एक जमाना आया, अगर हम बीच के समय को छोड़ दें तो वह आज का युग हुआ, और ऐटम को फोड़ने का तरीका निकला । ऐटम फोड़ने के तरीके से एक नई चीज हमारे साथ में आ गई, जिसको आइसोटोप्स कहते हैं । वह आइसोटोप्स बड़ी अद्भुत चीज है । आइसोटोप्स को जोड़ देते हैं शरीर के अन्दर जो अनेक अणु प्रमाणु होते हैं, उनके साथ और उनको शरीर के भीतर मालिक्यूल्स वगैरह के साथ बांध कर देखा जाता है कि कैलिशयम कहां जाता है, सोडियम कहां जाता है, आइरन कहां जाता है । यह तस्वीर सामने आ गई जो कि अद्भुत चीज है । आज हम देख सकते हैं कि कौन सी चीज कहां से चल कर शरीर में कहां जाती है और उसका क्या बनता है । साइंस के आविष्कारों के साथ और हम आगे बढ़े ह । क्यूरीज जो थे उन्होंने रेडियम का आविष्कार किया जिससे कि एक्स रे का आविष्कार हुआ । मान लीजिये किसी की हड्डी टूट गई । पहले जो हज्जाम होता था या कोई और होता था, जिसको बोन सेटर कहा जाता था, वह टटोल कर देखता था कि हड्डी ठीक जगह आ गई है या नहीं लेकिन अब एक्स रे से देख लिया जाता है कि हड्डी ठीक ठीक अपनी जगह पर आ गई है या नहीं ।

[डा० सुशीला नायर]

विज्ञान के विकास के साथ-साथ निदान का और शरीर चिकित्सा का विकास होता गयाहै । इसलिए नई नई चीजें दाखिल होती गयीं हैं । और नई चीजों के दाखिल होने के कारण आज हमारे सामने मार्डन सिस्टम आफ मैडीसिन मौजूद है ।

•

मगर हमने सोचा कि हमारे पुराने खजाने में क्या क्या बढ़िया रत्न पड़े हुए हैं, हम उन्हें तलाश करके देखें तो सही । उनको तलाश करने के लिए यहां पर कुछ साल पहले फैसला हुआ कि आयुर्वेद के कालिज वगैरह खोले जाएं । प्लानिंग कमीशन ने एक पैनल बनाया । मैं भी उस पैनल में थी । हमने सोचा कि अगर लड़कों और लड़कियों को आधुनिक सायंस का कुछ ज्ञान होगा तो वे आयुर्वेद के रत्नों को ज्यादा अच्छी तरह से बाहर ला सकेंगे और दुनिया के सामने रख सकेंगे । इसलिए उनको कुछ एनाटमी और कुछ फीजियालाजी सिखाकर फिर उनको आयुर्वेद सिखाना चाहिए यह फैसला हुआ । इंटीग्रेटेड नाम किसी ने नहीं दिया । चोपरा ने यह कहा था कि कि जब सारी साइंसेज इकट्ठा होंगी तो एक इंटीग्रेटेड सिस्टम बनेगा । लेकिन इस वक्त तो हम को आयुर्वेद में जो अच्छाइयां हैं उनको बाहर निकालना है । इसलिए हम चाहते हैं कि उसके ऊपर लड़के कांसेंट्रेट करें । पहले थोड़ा अनाटमी और फीजियालाजी का ज्ञान देकर आयुर्वेद सिखाने का नतीजा यह हुआ कि वह लड़के आज कहते हैं कि हमको ८० फीसदी ऐलोपैथी सिखायी गयी और २० प्रतिशत आयुर्वेद सिखाया गया । हम तो बिल्कुल मार्डन डाक्टर हैं, कंडेंस्ड कोर्स वगरह करवा कर हमको एम० बी० बी० एस० करवा दीजिए या किसी दूसरे तरीके से हमको इसके लिए रिकागनाइज कीजिए ।

इस परिणाम को देख कर जो आयुर्वेद के भक्त थे उन्होंने जोर की आवाज उठायी कि यह तरीका गलत है । यही शंका उन्होंने जब हमने आयुर्वेद की शिक्षा देना शुरू किया था उस समय भी उठाई थी लेकिन सबने समझा कि यह शंका ठीक नहीं है, यह बेबुनियाद है । ऐसा मान कर हमने उस तरीके को चलाया था । जब यह तरीका दस, बारह, चौदह साल चला और उसका ऐसा उल्टा परिणाम निकला तो हैल्थ सर्वे कमेटी, लक्ष्मी स्वामी मुदालियार कमेटी के सामने कई लोग पेश हुए और उन्होंने कहा कि आपने जो तरीका अख्तियार किया है उससे आयुर्वेद समाप्त हो जायेगा । ऐसा आपको नहीं करना चाहिए । हैल्थ सर्वे कमेटी ने उनके दृष्टि बिन्दु को स्वीकार किया ।

हैल्थ मिनिस्ट्री ने ही मुदालियर कमेटी बिठाई थी । हमारे पास जो अफसर हैं डाइरेक्टोरेट आफ हैल्थ में उनमें आयुर्वेद के बड़े पंडित हैं जो हमारा इस विषय में मार्ग दर्शन करते हैं ।

श्री डा० ना० तिवारी : (गोपाल गंज) : इस सर्वे कमेटी में कौन कौन सदस्य थे?

एक माननीय सदस्य : ज्यादातर ऐलोपैथी वाले ।

डा० सुशीला नायर : मैं वह बता कर सदन का समय नहीं लेना चाहती, आप उसके लिए किताब देख लीजिए ।

तो मैं आपसे यह निवेदन करना चाहती थी कि उसके बाद फिर कुछ ऐसा विचार चला कि वही पुराना तरीका जो पहले थोड़ी सी सायंस सिखाकर चलाया जाता था वह अच्छा था, उसी को आगे चलाया जाए । इस पर जो आयुर्वेद के खास भक्त लोग थे उन्होंने बहुत जोर से फिर आवाज उठायी और

प्लानिंग कमीशन ने, नन्दा जी ने, एक बड़ा पैनल बुलाया, सारे हिन्दुस्तान के जो आयुर्वेद के बड़े बड़े पंडित और विद्वान हैं वे सारे के सारे उसमें आए और उनकी बड़ी मीटिंग हुई और बड़ा चर्चा हुआ। उन लोगों ने फैसला दिया कि अगर आयुर्वेद सिखाना है और अगर आयुर्वेद के रत्नों को निकालना है तो आयुर्वेद में लड़कों को श्रद्धा होनी चाहिए। इस श्रद्धा के लिए जरूरी यह है कि उनको माडर्न मैडीसिन का कोई विषय न सिखाया जाए, उसकी तरफ उनकी बिल्कुल तवज्जह न दिलायी जाए, वे एक मन से, एक मन हो कर आयुर्वेद की साधना करें। फिर उन्होंने यह भी बताया कि उनकी उम्र इतनी हो, उनकी संस्कृत की इतनी शिक्षा हो, और मैट्रिकुलेशन या हायर सैकंडरी तक उनकी शिक्षा होनी चाहिए, और जब वे आयुर्वेदाचार्य हो जाएं, उसके बाद अगर वह चाहें तो ऐलोपैथी की कुछ बातें सिखायी जाएं, मगर पहले ऐसा न किया जाए। यह उनका मत था और सेंट्रल हैल्थ काउंसिल ने भी उसको स्वीकार किया और इस दृष्टि से स्वीकार किया कि इसी तरह से आयुर्वेद की भलाई होगी।

तो आप देखें कि यह एक अजीब चीज है। अगर लड़कों को पहले माडर्न सायंस सिखा कर आयुर्वेद सिखाया तो आरोप लगाया गया कि आयुर्वेद को सरकार मार डालना चाहती है, सरकार गलती कर रही है। अब उनके कहने पर उसको बदला जा रहा है तो कहते हैं सरकार आयुर्वेद को मार डालना चाहती है, वह गलती कर रही है। इस पर मुझे एक किस्सा याद आता है। एक बार शिवजी पार्वती जी के साथ कहीं जा रहे थे, उनके साथ नन्दी बैल भी था। शिवजी ने पार्वती जी से कहा कि तुम इस पर बैठ जाओ मैं साथ साथ चलता हूं। पार्वती जी बैठ गयीं। आगे जाने पर किसी साहब ने कहा देखो वह छोकरी तो ऊपर बैठी है और इस बुजुर्ग को चलना पड़ रहा है। पार्वती जी उतर गयीं और शिव जी उस पर बैठ गए। आगे कुछ लोगों ने कहा कि देखो इस बूढ़े को शर्म नहीं आती, कि दुलहन तो पैदल चल रही है और यह बैल पर बैठा जा रहा है। इस पर शिवजी ने कहा कि चलो हम दोनों इस पर बैठ जाएं और वे दोनों बैल पर बैठ गए। आगे जाने पर किसी ने कहा कि मालूम पड़ता है कि बेगार का बैल है इसीलिए दोनों इस पर बैठे हैं। तो वही चीज यहां हो रही है। हम जो भी करते हैं उसके लिए कहा जाता है कि तुम गलत कर रहे हो। मेरी समझ में नहीं आता कि क्या किया जाए। मैंने श्री गुलजारी लाल नन्दा जी से कहा कि जो आप कहें हम करने को तैयार हैं। मैं तो आधुनिक ढंग की डाक्टर हूं। मैं जो भी करती हूं उस पर लोगों को शंका हो सकती है। आप कहें वह किया जाए। जहां तक मेरा ताल्लुक है, मैं तो सायंस की पुजारन हूं और ज्ञान की शोध करना चाहती हूं। और आयुर्वेद में या और जगह जो भी अच्छाई हो उसको लेकर समाज की सेवा करना चाहती हूं।

हमारे तिवारी जी ने जामनगर के इंस्टीट्यूट के बारे में टोका की। वहां पोस्ट ग्रेजुएट क्लासेज चलते हैं और अंडर ग्रेजुएट क्लासेज भी चलते हैं। रिसर्च भी होती है। पोस्ट ग्रेजुएट क्लास और रिसर्च सेंट्रल गवर्नमेंट के अधीन है और अंडर ग्रेजुएट क्लास राज्य सरकार के अधीन हैं। हमारे पास जोरों से मांग आयी वहां के लोगों की, उनमें हमारे मुरारजी भाई भी शामिल थे कि इन्हें इकट्ठा कर दिया जाये। उन्होंने कहा कि अगर तुम लोग अपने हाथ में पोस्ट ग्रेजुएट शिक्षा और रिसर्च को रखते हो तो आयुर्वेद का ठीक विकास नहीं हो सकता। अंडर ग्रेजुएट क्लासों को, पोस्ट ग्रेजुएट क्लासों को और रिसर्च तीनों को इकट्ठा कर दो। अब तीनों को इकट्ठा करें तो यह काम गवर्नमेंट आफ इंडिया के

[डा० सुशीला नायर]

नीचे नहीं हो सकता क्योंकि अंडर ग्रेजुएट एजुकेशन स्टेट गवर्नमेंट के पास ही है । तब सबने यह फैसला किया कि इसके लिए एक इंडिपेंडेंट गवर्निंग बाडी बना दी जाए और उसमें ऐसे लोगों को रखा जाए जो आयुर्वेद में श्रद्धा रखते हों, जिनको उसमें विश्वास है, और जो पैसा हम खर्च कर रहे हैं वह इस गवर्निंग बाडी के मार्फत खर्च किया जाय इस प्रकार अंडर ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट, एजुकेशन को और रिसर्च को इकट्ठा किया जाए तो आयुर्वेद का विकास हो सकता है यह फैसला स्वीकार किया गया ।

मेरा तो यही निवेदन है कि जैसे भी हो सके हम आयुर्वेद को आगे बढ़ाना चाहते हैं । आखिर में जिस तरह भी हो हमारा उद्देश्य मनुष्य की सेवा करना है, समाज की सेवा करना है और उस सेवा के लिए हमको जहां से भी जो कुछ मिल सकता है उसको हम इस्तैमाल करना चाहते हैं ।

इन शब्दों के साथ मैं आशा करती हूं कि हमारे भाई यशपाल सिंह जी अपने प्रस्ताव को और दसरे भाई अमेंडमेंट्स को वापस ले लेंगे और इस चर्चा से हमको जितना लाभ मिल सकेगा वह हम लेने का प्रयत्न करेंगे ।

श्री दा० ना० तिवारी : महाबलेश्वर कानफरेंस का क्या फैसला हुआ ?

डा० सुशीला नायर : कानफरेंस ने पैनल का फैसला स्वीकार किया और शुद्ध आयुर्वेद को स्वीकार किया ।

Shri Khadilkar (Khed): Mr. Speaker, Sir, I am very sorry, the hon. Health Minister just now justified a certain shift in the policy regarding Ayurveda. She is not here to listen to the criticism which I want to offer about it. I hope the Deputy Minister will convey.

The Deputy Minister in the Ministry of Health (Dr. D. S. Raju): I will convey your criticisms.

Shri Khadilkar: Further, really I am surprised that the teaching of Ayurveda, has to be guided by Shri Nanda, the Planning Minister who, I am told starts his early life with a prostration before a sadhu, consulting an astrologer and going in the evening to a homoeopath. With such an approach to life and science, if the Planning Minister is to guide the education policy regarding Ayurveda or Government's approach to Ayurveda, I think medicine and science have no future in this country. I was very much surprised when the Mover of the Resolution—it is a good Resolution because it has raised a good discussion in this House—brought fanaticism in his argument. Others who supported him, supported him with another type of fanaticism regarding language. If at all we want to advance this country in the field of science and have a scientific approach to life and other systems at various levels, then, we must eschew fanaticism.

My submission is, I entirely agree with what Dr. Gaitonde said in the beginning. We must try to cultivate a scientific approach to all systems of medicine. Today, all systems of medicine are imperfect, including Allopathy. There are certain advantages. Firstly, they have developed pathology which Ayurveda has not got. They have discovered after experiment and a good deal of scientific approach certain medicines which are curative, certain medicines which are preventive and others which are of very little sifinificance so far as the preventive or curative aspect is concerned, but which are being taken because people get addicted to medicine due to commercial medical practice. Therefore, my humble submission is that this Government is playing with this policy for a very

long time. As the Health Minister pleaded, first, there was an integrated course where Allopathy and Ayurveda and Unani were taught simultaneously. All the systems came in contact and realised what is good and what is bad and tried to absorb what is good in the other systems. There was some sort of research in these institutions. Many institutions have been started. Lakhs of rupees have been spent. The Institutions have been recognised. Ayurvedic-*cum*-Allopathic institutions have been recognised by Universities and degrees have been conferred. Now, suddenly, in the Mahabaleshwar conference, they have made a re-assessment and have come to the conclusion that this combination of education is neither good to Ayurveda nor to Allopathy and so this marriage must be broken, and should be divorce so far as medical education system is concerned. Good institutions of research were started. One was at Jamnagar, I know for certain. That institution was handed over to Ayurveda Acharyas and others who have no knowledge of modern systems of medicine.

Therefore, I appeal to the Government, do not play with these systems in a haphazard manner. You have started playing with national policy because, unfortunately, there is no centre with a certain amount of objective study of every science, every subject, every policy. Everything is *ad hoc*, hand to mouth. Therefore, we are today facing a certain crisis. I would appeal to the Health Ministry, because it is part of education, let the new generation educate themselves in a system and in such a manner with a scientific approach. Whether you teach them Ayurveda or whether you teach them Unani or whether you teach them Allopathy, the basic approach must be scientific. Dr. Gaitonde quoted isotopes, microscopes and other things which are commonly used in Allopathy. I welcome them. How did isotopes come to medicine? Because of this approach. Many scientists have lost their lives. The West today has advanced. Our enemy China, though they are studying the old systems of medicine, even in the socialist world, in the Soviet Union, where even the Ayurvedic system is being studied, in their approach they have not changed. They take what is good after it has been proved useful. After experimenting, a certain system is adopted. Here, no experiment. Because it was discovered and the Mudaliar committee recommended, the Central Council adopted and all the money that was spent on this education is to go down the drain, and the young graduates of Allopathy and Ayurveda, today, have just been thrown overboard. I do not like this method of approach to a policy. There is no fundamental approach at all, no fundamental understanding and no scientific approach regarding medical education or regarding Ayurveda, Unani or Allopathy. Therefore, I would humbly submit that whatever decisions have been taken at Mahabaleshwar should be reconsidered in the light of past experience. I am not pleading that ignorantly. Equally, there is a certain amount of superstition in Allopathy also, and, therefore, Allopathy should not look down upon Ayurved also. There is no perfect system of medicine. There is the system of naturopathy and other systems also are there. These are all experimental medicines. Whatever is good for the health of humanity, and whatever is good for the health of the individual and the society at large should be adopted, and faclities should be created for teaching such systems.

Therefore, I would appeal that we must eschew fanaticism such as was exhibited from the one side by those who supported the Ayurvedic system, and from the other side by the rather unscientific and unplanned approach of the Planning Minister, if that is, so, to Ayurveda; this type of fanaticism should be completely given up. That alone would save the next generation. Otherwise, the next

[Shri Khadilkar]

generation who will be the rulers of this country, and who have been destined to rule the country, and the new generation that is coming up will curse the present generation and the present rulers. History will never excuse them for the mistakes that they have committed.

Mr. Speaker: Now, Shri Bishan-chander Seth. माननीय सदस्य पांच मिनट से ज्यादा न लें ।

श्री बिशनचंद्र सेठ : बहुत अच्छा । लेकिन अन्य माननीय सदस्यों ने इस से बहुत ज्यादा समय लिया है ।

Shri Warior: I think we are sitting till 6:30 p.m.?

Mr. Speaker: This resolution will go on till 5:45 p.m. That is what I am told.

श्री यशपाल सिंह: यह साढ़े छः बजे तक चलना चाहिए । अगले रेजोल्यूशन के मूवर को पांच मिनट दे दिये जायें, जैसा कि पिछली बार मेरे साथ किया गया था ।

Mr. Speaker: We started at 3·45 p.m. Two hours were given for this, and, therefore, this will conclude by about 5·45 p.m.

Shri Warior: We are adjourning at 6 p.m.?

Mr. Speaker: We shall see.

श्री बिशनचन्द्र सेठ (एटा) : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं बहुत थोड़ी सी बातें निवेदन करना चाहता हूं, मगर उन का बड़ा मूल्य है । यह ठीक है कि अंग्रेज के समय में हमारी भारतीय औषधियों को बराबर का दर्जा नहीं दिया गया था लेकिन वास्तव में यह हमारे देश का आज बड़ा दुर्भाग्य है कि स्वराज्य मिलने के बाद भी विलायती औषधियों के लिए तो बड़ा स्थान है, लेकिन देशी औषधि के लिए कोई स्थान नहीं ।

मैं एक मिनट में आप को अपना केस सुनाना चाहता हूं । मैं बीमार हो गया और इस सम्बन्ध में मैं कलकत्ता, बम्बई और पता नहीं कहां कहां गया । जब घर आया, तो वैद्य जी ने मुझे बताया कि तुम लहसुन का एक जवा सुबह के समय पीस कर खा लिया करो । मैं आप को बताना चाहता हूं कि मैं छः वर्ष से रोज इस को खाता हूं और आज तक मुझे तो ब्लड प्रैशर की कोई भी बीमारी नहीं हुई ।

श्री दी० चं० शर्मा: बड़ा अफसोस है ।

श्री बिशनचंद्र सेठ: मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि जहां जो जानवर या परिन्दा सृष्टी में पैदा होता है, भगवान् ने उसी जगह उस का खाना और दवाइयां आदि पैदा किया है । इसी आधार पर आयुर्वेद की औषधियां हमारे देश की जल-वायु के अनुकूल है । इस के बावजूद आज इस बात पर डिस्कशन हो रहा है कि हमारे लिए वे औषधियां उपयुक्त हैं या विदेशी एलोपैथिक औषधियां ।

अध्यक्ष महोदय : यह तो नहीं हो सकता कि हर एक के लिए लहसुन ऐसे ही मुफ़ीद हो ।

श्री बिशनचंद्र सेठ : मैं यह नहीं गुजारिश कर रहा हूं ।

अध्यक्ष महोदय: जैसे शर्मा जी को लहसुन माफ़िक नहीं आयगा ।

श्री बिशनचंद्र सेठ : हो सकता है ।

हमारे देश के लिए यह एक दुर्भाग्य की बात है कि जो लोग इन बातों को तय करने वाले हैं, उन के दिमाग में विलायती दवायें और विलायती विचार भरे हुए हैं । उन को यह सुहाता नहीं है कि देश की भावना के सम्बध की बातों को उस तरह से सोचें, जिस तरह की जनतंत्र शासन में उन्हें सोचना चाहिए ।

आप देखिए कि आज एक वैद्य को अपना कोर्स पूरा करने में, अपनी शिक्षा पूरी करने में, कितने वर्ष लगते हैं और कितने वर्ष एक

डाक्टर को लगते हैं, इस अवस्था में इस बात का कोई कारण नहीं है कि जब सर्विसिज में वैद्य और डाक्टर को लिया जाता है, तो डाक्टर के लिए तो बहुत बड़ा स्थान होता है, परन्तु वैद्य के लिए कोई स्थान ही नहीं । जब गवर्नमेंट की तरफ से आयुर्वेद को किसी तरह का कोई एनकरेजमेंट नहीं दिया जाता है, न तो सर्विसिज में और न साइंटिफिक नालेज को डेवलप करने के लिए, तो मैं सोच नहीं सकता कि कैसे इस प्रकार की बातें कही जाती हैं कि आज की साइंस ने अनेक प्रकार का डेवेलपमेंट किया है । सरकार को भारतीय चिकित्सा-पद्धति को विकास और उन्नति करने की सब सुविधायें देनी चाहिए ।

अगर कोई इस बारे में उपमा पूछना चाहता है, तो मैं यह जानना चाहता हूं कि आज सरकार खद्दर किस हिसाब से चला रही है, खद्दर चलाने की कौन सी तुक है । जब हम अंग्रेज से लड़ रहे थे, तो हम ने उस के जवाब में खद्दर को चलाया था । आज वह बिल्कुल अनसाइंटीफिक है । बिना शक व शुबहा अनसाइंटिफिक है । आप उस पर करोड़ों रुपया वार्षिक व्यय कर रहे हैं । उसका कोई लाभ निकल नहीं रहा है । मगर चूंकि आपने माना हुआ है कि खद्दर पहनना बहुत जरूरी है, इस वास्ते इसको आप चलाये हुए हैं । चूंकि आज तक जो भी मंत्री महोदय रहे हैं या मंत्री महोदया रही हैं, वे सभी विलायती दवाओं के सम्बन्ध के उपासक थे, उनके सम्बन्ध में ज्ञान रखते थे, लिहाजा उन्होंने कभी इस तरफ ध्यान नहीं दिया । हमारे देश में खद्दर चल सकता है जिस में करोड़ों रुपये की हर साल हानि हो रही है, मगर वह चीज जो कि हमारी जलवायु के अनुकूल है, जिसका स्थान सब के हृदय में है, नहीं चल सकती । मैं निवेदन करना चाहता हूं कि जो वैद्य हैं और जो डाक्टर हैं, उन दोनों का एक सा स्टेटस मिलना चाहिये, और उसी प्रकार की मान मर्यादा वैद्य को भी मिलनी चाहिये जिस प्रकार की एलोपैथी के डाक्टर को मिलती है । जिस तरह से आप आज विलायती औषधियों पर खर्च करते हैं, जिस तरह से उसके रिसर्च पर खर्च करते हैं, उसी तरह से आपका यह भी नैतिक कर्तव्य है कि अगर एक करोड़ रुपया प्रतिवर्ष खर्च किया जाता है तो पचास लाख आयुर्वेद पर खर्च हो और पचास लाख एलोपैथी पर । ऐसा अगर किया जाता है तब भी सब हो सकता है । लेकिन आज तो मुल्क के विभिन्न राज्यों में कहीं पर आधा पैसा कहीं पर एक पैसा और कहीं पर दो पैसा प्रति मानव शासकीय खर्च होता है ।

एक विरोध की बात है, मैं आपके सामने रखना चाहता हूं । इसको सुन कर मुझे ताज्जुब होता है । परन्तु मैं आदर के साथ कहना चाहता हूं कि जो वद्य आज निकल रहे हैं, वे जो भी हों लेकिन न वैद्य हैं और न ही डाक्टर । बनारस हिन्दू यूनिवर्सटी से जो वैद्य निकलते हैं, उनको अगर वैद्य जी कहा जाता है तो उनके कानों को बुरा लगता है और अगर उनको डाक्टर जी कह दिया जाता है तो बड़े प्रसन्न हो जाते हैं । मैं चाहता हूं केवल जो भी वैद्यक पढ़ कर निकलें, मेहनत के साथ अध्ययन कार्य करें, सच्चाई के साथ पढ़ें, अपने विषय के ज्ञाता हों और अगर ऐसा होता है तभी वैद्यक का जो कार्यक्रम होना चाहिये वह पूरा हो सकेगा ।

अन्त में मैं इतना ही निवेदन करता हूं कि वैद्यों को भी आप मान्यता प्रदान करें और जितना धन एलोपथी पर खर्च करते हैं, उतना ही धन आयुर्वेदी पर भी खर्च करें और जो मान मर्यादा डाक्टरों की है, वही मान मर्यादा वैद्यों की भी होनी चाहिये ।

श्रीमती लक्ष्मीबाई (विकाराबाद) : अध्यक्ष महोदय, अभी तक एक बहन को भी बोलने का अवसर नहीं दिया गया है ।

श्री बागड़ी : मैं भी यहां पर बैठा हुआ हूं ।

अध्यक्ष महोदय : आप अपनी जगह पर नहीं हैं, यहां से नहीं बुला सकता हूं ।

श्री बागड़ी : मैं अपनी जगह पर चला जाता हूं ।

अध्यक्ष महोदय : इकरार नहीं है कि अपनी जगह पर जायेंगे तो जरूर बुला लिये जायेंगे ।

श्री बागड़ी : पचास परसेंट इकरार तो आप कर ही चुके हैं ।

अध्यक्ष महोदय : श्री हनुमन्तैया ।

Shri Hanumanthaiya (Bangalore City): I am grateful to you for giving me a few minutes. So far as ayurveda is concerned, it has the sympathy and support of the whole people. The question is how to implement this popular will. I will not enter into arguments. I will state some simple facts and offer a few suggestions.

We are a nation of poor people and peasants. This system of medicine is indigenous, cheap and handy. If it is a question of the allopathic system of medicine, the peasant has to run from his village several miles either to the taluk headquarters or district headquarters, as the case may be. Therefore, we in the Congress Party who are wedded to the ideology of handicrafts and village industries ought in the same breath to support this indigenous system of medicine.

17·24 hrs.

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair.*]

To put it in the language of the Finance Minister, it saves foreign exchange also. Not that Government is not encouraging the ayurvedic system of medicine. It is doing its best. Its best has to be bettered.

The first suggestion I make is that this system of medicine has to be saved from the hands of Allopathic doctors. In the guise either of Directors of Public Health or Ministers or Advisors, it so happens that everywhere in India the Ayurvedic system has to be controlled administratively by Allopathic doctors. We have to free this system from their hands and jurisdiction. If Ayurveda is allowed to be managed by people who have faith, in it, people who practise, it, it will have a bright day. Therefore, I suggest that just as the Allopathic system of medicine has a statutory council called the Indian Medical Council, the Ayurveda system must have a statutory council, call it Bharat Ayurveda Samiti or by some such name. It must have full authority and jurisdiction regarding all matters connected with Ayurveda, not only education and practice but also research. The system of Allopathic medicine is propped up by these three agencies—education, research and profession. Therefore, the professional status and research facilities must be given to this system of medicine also on the same scale as we are giving to the Allopathic system. I would therefore place this suggestion before the Government that as soon as possible the Ayurvedic system of medicine should be given the same prestige, the same status, as Allopathic medicine. Then the system will take care of itself.

Secondly, there is the question of insufficient number of bright young men and women going to the Ayurveda system of medicine. After, all, it is the income that determines the pattern of a profession. Any profession which has no income or a meagre income will certainly not attract better brains. So, in our Ayurvedic hospitals and colleges, the salary and status of the teachers, professors and doctors must be the same as is guaranteed to Allopathic medicine. If status and autonomy are given to the Ayurvedic system in the manner I have suggested, Government will then have done justice to this system.

I would bring a proverb in my language, Kannada, to the notice of the House and close my speech:

Katakana munde Basavana-purana helidare yenu prayojana?

That means, if you preach the cow epic before a butcher, what use is it?

[Shri Manumanthaiya]

In Hindi, my friend undertook to translate it for me.

Shri Sham Lal Saraf: Everybody has understood it.

Shri Hanumanthaiya: It is like this:

कसाई के सामने गो संहिता पढ़ें तो क्या फायदा होगा ।

Therefore, if the Government is serious, and if the concerned Ministers are serious, as they are,—I know both of them, they are a very sincere set of patriots—they should wash their hands from this Ayurvedic system, and a separate council with autonomous status must be guaranteed to it. History and the generations to come will hold them in great esteem if they do so.

श्री रा० शि० पाण्डेय (गुना) : उपाध्यक्ष महोदय, जो प्रस्ताव हमारे मित्र श्री यशपाल सिंह ने रक्खा है उस का समर्थन करने में मुझ को थोड़ा संकोच तो जरूर होगा क्योंकि अन्त में वे इस को वापस ले लेंगे ।

श्री यशपाल सिंह : नहीं, नहीं । वापस लेने का कोई सवाल नहीं है । रामो द्विर्नवि-भाषिते । हम राम के वंशज हैं, इस लिये इस को वापस नहीं लेंगे ।

श्री रा० शि० पाण्डेय : आयुर्वेद पद्धति और प्रणाली में हमारे यहां किसी की दो रायें नहीं हो सकतीं और हम बड़ी आस्था के साथ, बड़े विश्वास के साथ उन पुराने दिनों की कल्पना कर सकते हैं जिन दिनों हमारे ऋषियों ने हिमालय की कन्दराओं में, वहां की चोटियों में जा कर, पर्वत मालाओं में घूम कर हमारे शरीर की रक्षा के लिये औषधियों का निर्माण करने में किन किन पदार्थों की, जड़ी और बूटियों की आवश्यकता थी, इस की खोज की । आज स्मरण होता है उन की इस तपस्या का ।

यहां पर यह प्रश्न नहीं है कि आयुर्वेद महान है या ऐलोपथिक सिस्टम महान है । महान तो है हमारा देश और महान है हमारी संस्कृति, जिस के पीछे हमारी बड़ी भारी सनातन अनुभूतियां हैं, जिस के पीछे हमारी पद्धति और आस्थायें हैं विश्वास और श्रद्धा है । यह एक ऐसा प्रश्न है जिस का निर्णय होना चाहिये । शरीर की रक्षा की कल्पना हमारे ऋषियों ने की । समय और काल के अनुसार हम पराधीन हुए, हमारी पद्धतियां भी बदलीं, लेकिन जब आज हम स्वतन्त्र हैं तो हम यह चाहते हैं कि इस स्वतन्त्र वातावरण में एक बार फिर हम उन ग्रन्थों के पन्नों को पलटें जो बन्द हैं । चाहे वह आचार्यों के द्वारा खोले जायें चाहे विद्वानों और संसद् के द्वारा या चाहे वे वैद्यों और डाक्टरों के द्वारा खोले जायें, लेकिन इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि एक बार फिर हम उन ग्रन्थों को देखें जिन में मनुष्य मात्र की रक्षा की अनुभूतियां छिपी हुई हैं । उस पद्धति में मां की घुट्टी से ले कर मृत्यु के समय गंगा जल की दो बूंदें डालने के समय के बीच में—"राम राम सत्य" से पहले गंगा जल की दो बूंदें डाली जाती हैं—आयुर्वेद खड़ा हो कर रक्षा का आन्दोलन करता है और आह्वान करता है कि हम तुम्हारी रक्षा के लिये खड़े हैं ।

प्रश्न यह है कि पिछले समय में हमारे यहां जो यह औषधियां थीं, चाहे वह अरिष्टादिक हों, चाहे रासायनिक हों या भस्मादिक हों, उनको हमने पीछे छोड़ दिया और जैसे कि रेडी मेड माइन्ड होता है, यानी आज किसी चीज की आवश्यकता है तो वह आज ही मिले, इस मनोवृत्ति से बाजार में जाते हैं जहां पर रेडी मेड चीज मिलती है । तुरन्त दर्द हुआ, कष्ट हुआ तो हम किसी फार्मेसी में गये और कोई दवा ले ली, ऐसी बात चलती है । क्या ही अच्छा हो कि हम इस स्वतन्त्र वातावरण में एक बार फिर ऐसा असर पैदा करें कि जो बीमार हो, जो दुःखी हों वह भी एक बार सोचे कि हमारे यहां कौन सा ऐसा औषधि का भंडार हो सकता है जहां हमारे शरीर की परीक्षा हो, वातावरण की परीक्षा हो, जिस वातावरण में हमें कष्ट हुआ है और पूरा पूरा

[श्री रा० शि० पाण्य]

निदान मिल सके ? जितनी रेडी मेड क्विक मेडिसिन्स हैं, क्विक इलाज हैं, क्विक रेमेडीज हैं, उनके पीछे जो बकग्राउंड है, जो पृष्ठभूमि है, अगर आप उस पृष्ठभूमि को देखें तो मालूम होगा कि जिस औषधि के माध्यम से तुरन्त लाभ होगा उसका असर शरीर पर बुरा पड़ेगा, और वह इसलिये कि जितनी ऐन्टी बायोटिक मेडिसिन्स हैं, वे जहर से बनाई जाती हैं । मैंने हाफकिन्स इन्स्टिट्यूट में देखा है कि स्नेक प्वाइजन इकट्ठा करके मेडिसिन बनाई जाती है, यह दूसरी बात है, लेकिन माडर्न प्रासेस यह है कि तुरन्त दवा ली और तुरन्त अच्छे हो जाओ, मरीज प्रसन्न हो कर चला गया । अगर उसके पीछे अनुसन्धान हो कि क्यों कष्ट हुआ, कैसे कष्ट हुआ और उसका निवारण कैसे हो, तो उस पद्धति का आधार आयुर्वेद है । जिसकी प्रोफाउन्डिटी यह है कि हम एक बार देखें कि मनुष्य को स्वस्थ करने में, उस के जीवन को दीर्घकालीन बनाने में हम कौन सी पद्धति का उपयोग कर सकते हैं, उसका नाम आयुर्वेद है ।

हमारा देश गरीब है । आपने एक फारेन इम्पोर्टेड प्रणाली को आगे रख दिया । बड़ी बड़ी दवायें मिल सकती हैं बड़े बड़े नगरों में, लेकिन घोड़ी पर चढ़ कर जाने वाला वैद्य गावों तक पहुंच जाता है, डाक्टर नहीं पहुंच पाते । अगर आपने इस एलोपैथिक सिस्टम को लिया है, एलोपैथिक डाक्टरों को आपने मंजूर किया है तो सब से पहले आपको कहना चाहिये कि डाक्टर गांवों में जायें । वह गांवों में जाकर काम करें । लेकिन आज तो वह घोड़ी पर चढ़ा हुआ वैद्य टक-टकाता हुआ दस मील जाता है आश्वासन देता है, सम्वेदनशीलता का भाव प्रकट करता है और औषधि देता है, चाहे रोगी मरें या जिएं । मैं समझता हूं कि जीते भी हैं । मैं समझता हूं कि जब हम इस प्रश्न पर विचार करें तो देश के करोड़ों अकिंचनों का एक चित्र सामने रक्खें । उन करोड़ों माताओं के चित्र भी सामने रखें जो अपने बेटे को रोता हुआ देख कर घुट्टी में चार पांच चीजें मिला कर दे देती हैं । साथ ही यह भी ध्यान रखें कि हमारे देहात के आदमी गरीब हैं, वे आपकी ऐन्टीबायोटिक इंजेक्शन और ऐन्टीबायोटिक औषधियां शहर आ कर नहीं ले सकते है । आज हमारे यहां ऐसी औषधियां हैं, और अगर ऐसी औषधियां नहीं हैं तो उनकी खोज की जाये । अनु-सन्धान और खोज की भूख ले कर अगर आज हम करोड़ों रुपयों की धन राशि दें अपने वैद्यों और विद्वानों को, जो बड़ी भावना और तपस्या के साथ काम करना चाहते हैं, तो हिमालय आज भी स्वागत करने को तैयार है । जड़ी बूटियों से भरा हुआ वह आपका स्वागत करेगा और कहेगा कि यहां आओ हमारे पास ।

मैं इतना ही कह कर समाप्त करना चाहूंगा कि दुनिया में ऐलोपैथिक ने जो प्रोग्रेस की है उसके लिए हमारा हिमालय साक्षी है कि हजारों अंग्रेजों ने, बड़े बड़े जर्मन लोगों ने अपनी इस भूख को, अपनी इस हंगर को लेकर हिमालय की तरफ घूम कर खोजें की हैं । वे जंगलों में गये । वहां पर जाकर जो जो चीजें थीं उनको उन्होंने देखा । मैंने देखा है कि जर्मन भाषा में और न जाने किन किन भाषाओं में उन्होंने आयुर्वेद की पुस्तकों का ट्रांस-लेशन किया । यहां पर मेरा आह्वान है कि जब उन्होंने हमारे साधनों का उपयोग किया, हमारे ग्रन्थों का उपयोग किया तो क्या कारण है कि जो ग्रन्थ हमारे पास उपलब्ध हैं, जो साधन उपलब्ध है, उनका समन्वय करते हुए, हम एक बार फिर उन पन्नों को न उलटें, क्यों न हम पुरानी संस्कृति का स्मरण करें और धन राशि दें, आदर दें, सम्मान दें ताकि वे प्रेरित हों, हमारा देश भी कुछ अनुभव करे कि हमारे यहां बड़ी खोज के लिये दरवाजे खुले हैं ? अगर ऐसा हो तो कोई कारण नहीं

ज्ञान का भंडार है, जिनमें प्रेरणा है और जिन में दीर्घकालिक मनुष्यत्व की भावना है ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (बिजनौर): उपाध्यक्ष महोदय, अभी कुछ दिन पहले लंका की सरकार ने एक आयुर्वेद सम्मेलन किया था और उस में हमारे देश के प्रधान मंत्री, श्री जवाहरलाल नेहरू को भी आमन्त्रित किया था । मैं इस के लिये लंका की सरकार का बहुत आभार मानता हूं कि उन्होंने हमारे प्रधान मंत्री को इस सम्मेलन में आमन्त्रित कर के जहां उन्हें सम्मान दिया वहां यह बात भी सोचने का अवसर दिया कि आयुर्वेद का, जो भारतवर्ष की अपनी सम्पत्ति है, दूसरे देशों में कितना सम्मान हो रहा है और उस के विकास के लिये वह कितने यत्नशील हैं । पंडित जवाहरलाल नेहरू ने वहां जो भाषण दिया उस की कुछ पंक्तियां पढ़ कर मैं सुनाना चाहता हूं । अपने भाषण में प्रधान मंत्री ने कहा :

> "निस्संदेह अतीत काल में आयुर्वेद ने एक विज्ञान की हैसियत से आश्चर्यजनक उन्नति की थी, किन्तु वर्तमान समय में जिस तरह भारत की अन्यान्य क्षेत्रों में प्रगति अवरुद्ध हुई, आयुर्वेद भी अपनी गत्यात्मकता खो बैठा । फलतः वह आगे न देखते हुए अतीत काल में ही अपनी दृष्टि गड़ाये रखने का अभ्यासी हो गया । सम्प्रति कुछ मंत्रों के उच्चारण एवं कतिपय योगों के प्रयोग तक ही आयुर्वेद समिति रह गया है । मेरा दृढ़ विश्वास है कि आयुर्वेद व यूनानी चिकित्सा पद्धति में वैज्ञानिकता का यथेष्ट समावेश करने की आवश्यकता है । इसे अत्याधुनिक बनाने से सारी मानव जाति इस प्रणाली से उपकृत हो सकती है ।"

मैं ने यह शब्द विशेषकर इस लिये पढ़ कर सुनाये हैं कि हमारी सरकार को यह सोचने की आदत हो गई है कि प्रधान मंत्री अगर किसी बात के लिये प्रमाण पत्र दे दें तो हमार मंत्रिमंडल उस बात को ब्रह्मवाक्य समझने लगता है, और अगर प्रधान मंत्री किसी बात के सम्बन्ध में अपनी विपरीत सम्मत्ति व्यक्त करें तो मंत्रियों के सोचने का ढंग बिल्कुल ही उलटा हो जाता है ।

महाबलेश्वर में शुद्ध आयुर्वेद को प्रचलित करने का जो निर्णय लिया गया उस सम्बन्ध में मैं अपने स्वास्थ्य मंत्री से बड़ी नम्रतापूर्वक निवेदन करना चाहता हूं कि वे इस बात को थोड़ा कसौटी पर भी कस कर देखें कि आयुर्वेद के जिन छात्रों को आप ने आयुर्वेद और ऐलोपैथिक दोनों प्रणालियों की सम्मिलित शिक्षा दी है वे इस समय चिकित्सा के क्षेत्र में ज्यादा सफल हो रहे हैं या केवल मात्र वे जिन को ऐलोपैथिक या आयुर्वेद की शिक्षा दी गई है, वे ज्यादा सफल हो रहे हैं । मैं इस बात को चुनौती के साथ कह सकता हूं कि आयुर्वेद और ऐलोपैथिक दोनों का सम्मिलित कोर्स जिन्होंने अध्ययन किया है, आप गांवों और शहरों में जा कर देखें, वे ऐलोपैथिक डाक्टरों की अपेक्षा ज्यादा सफल हो रहे हैं । बल्कि मैं तो इस सम्बन्ध में एक और सुझाव भी देना चाहता हूं कि जैसा श्री हनुमंथैया ने कहा कि जैसे ऐलोपैथिक डाक्टरों को वेतन और सम्मान दिया जाये उसी प्रकार आयुर्वेद के स्नातकों को भी उतना ही वेतन और सम्मान दिया जाये । परन्तु मेरा कहना इस सम्बन्ध में कुछ और ही है । जिनको आयुर्वेद और ऐलोपैथी का पूरा ज्ञान प्राप्त है उनको सम्मान भी अधिक मिलना चाहिये और वेतन भी अधिक मिलना चाहिये क्योंकि वे दोनों विषयों के ज्ञाता हैं ।

इसी सम्बन्ध में मैं आपसे नम्रतापूर्वक एक और अनुरोध भी करूंगा कि जब से आपने इकहरी शिक्षा देने का यह निर्णय लिया उसका परिणाम यह हुआ है कि लाखों करोड़ों रुपये

[श्री प्रकाशवीर शास्त्री]

खर्च करके आपने जिन आयुर्वेदिक कालिजों की स्थापना की थी और जिनमें पहले १५०, या २०० या ११० लड़के पहले वर्ष में होते थे उनमें जब से आपने शुद्ध आयुर्वेद का निषे किया है पांच पांच और छः छः लड़के दिखायी दे रहे हैं । आप जिस पौधे को अपने हाथ से सरकार ने लगाया उसको स्वयं ही काटते भी रहे हैं । यह कहां की बुद्धिमत्ता है ।

जहां तक जामनगर के इंस्टीट्यूट का सम्बन्ध है डा० सुलीला नायर ने कहा कि मेरी राय है दोनों प्रकार की चिकित्सा प्रणालियां आगे बढ़ें और अधिक उपयोगी बनें । लेकिन नन्दा जी ने उसका विरोध किया । मैं कहना चाहता हूं कि क्या नन्दा जी या मोरारजी देसाई की सम्मति ज्यादा मल्यवान है या आयुर्वेद विज्ञान के विकास की भावना मूल्यवान है । अगर इस प्रकार का फैसला किन्हीं व्यक्ति विशेषों के कहने से लिया जायगा और विज्ञान के विकास की दृष्टि से नहीं लिया जायेगा तो यह उचित नहीं होगा ।

स्वास्थ्य मंत्रालय में उपमंत्री (डा० द० स० राजू) : आप इंटीग्रेटेड सिस्टम चाहते हैं या शुद्ध आयुर्वेदिक ?

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : जो दोनों का सम्मिलित तरीका अब तक चलता आ रहा है उसी को चलने दिया जाये और उसके लिये ज्यादा सुविधायें दी जायें और उस समन्वित प्रणाली को आगे बढ़ाया जाये ।

अन्त में मैं एक बात कह कर अपनी बात समाप्त करता हूं कि आज आप सेना के लिये केवल ऐलोपैथी के डाक्टरों की ही सेवा प्राप्त कर रही हैं, वह इन कुशल और चतुर हाथों की सेवा क्यों नहीं प्राप्त करतीं जो कि ऐलोपैथी और आयुर्वेद दोनों का ज्ञान रखते हैं और जिनकी देश में काफी संख्या भी है, और सेवा के लिये आतुर है हैं

इन शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव की भावना का स्वागत करता हूं ।

The Deputy Minister in the Ministry of Health (Dr. D. S. Raju): Mr. Deputy-Speaker, Sir . . .

Some Hon. Members *rose*—

Mr. Deputy-Speaker: We should close at 6.15. The Minister wants 10 minutes; the mover also should be given some time for reply. Then, we have to give some time to the other resolution. Even if we extend the time, all the speakers cannot be accommodated.

Dr. D. S. Raju: Sir, I am glad that so many hon. Members have contributed to the discussion on this very important subject. The main resolution moved by the hon. Member, Shri Yashpal Singh, is that the allopathic system of medicine be replaced by the ayurvedic system. I beg to state that in the present stage of our development, to take such a step—replacement of allopathic system by ayurvedic system—is very undesirable, inappropriate and even very dangerous.

Dr. M. S. Aney: Why dangerous?

Dr. D. S. Raju: I will explain that; let him wait. Both the senior Minister and myself are lovers of ayurveda. It is a great science, no doubt. It had its hey-days some thousands of years ago. Great truths are enshrined in ayurveda. But for reasons, historical and political, it has fallen under a great debris. When we lost our freedom, we lost our sciences; we lost ayurveda also.

It is true that wherever there is truth, it cannot be hidden for a long time; it must come out one day. Now gradually we are learning the truths which are enshrined in ayurveda. The *sarpagandha* for instance, which is an ayurvedic medicine, has been found to be very good for high blood pressure and for snakebite. It has been

identified and put in the market now. Similarly, gold was used in ayurveda. Even today we are using myo-crysin which is a gold preparation for tuberculosis. So, truth can never be hidden.

But now, Sir, the so called allopathic system is a part and parcel of modern science. It is a part of the same science which has put man into space. It is a part of the same science which has given rise to sputniks, atom bombs and all those things. It is a part of the same science which has given us reactors and isotopes.

Now, the so called allopathic system—I do not use the expression 'allopathic system', it is the modern system—has made phenomenal progress. It is practised in almost all countries of the world. Thousands of eminent brains are working on research. They are spending millions of dollars all over the world in researches in the modern system of medicine. Should we ignore them? Should we not take benefit out of them? Should we not make use of those researches? I think it is very dangerous to ignore them. We had lost our freedom because we refused to march ahead. We might again be threatened. It is a question of survival. We cannot ignore modern science. The modern system of medicine is inter-linked, intertwined with modern science.

How can we replace allopathic system now? What remedies have we got against most of these preventible diseases? How can we prevent small pox and cholera? What about the eradication programmes that we have undertaken? Take malaria, for instance. How many millions are dying every year due to that disease? What medicines have we got in ayurveda against that disease? What about cholera and small pox? These are diseases which were decimating millions of people all over the world. We are in the midst of our eradication programmes. We are spending millions of rupees over them. At this stage it would be dangerous to replace this system. That is why I said it is very dangerous. Nobody would like to change horses in midstream. I submit, we are in the midstream. It is very dangerous to think of changing the system at the moment.

But, as I said earlier, we are doing everything possible to develop and advance the science of ayurveda. We are spending a lot of money for the last five or six years. I can give the figures. For the research and advancement of ayurveda we have spent about Rs. 12,82,000 in the year 1954-55, Rs. 10,20,000 in 1956-57, Rs. 16,22,000 in 1957-58, Rs. 26,69,000 in 1958-59, Rs. 14,42,000 in 1960-61 and Rs. 17,28,000 in 1961-62. So we are not ignoring or neglecting the development of ayurveda. We are trying to do everything possible.

But there are many gaps in the system of ayurveda. We have to find out those gaps and fill them. Even in ancient days it was a very scientific system. It is said that the ancient rishis dissected dead bodies by tying them and keeping them in a running stream. After a few days layer after layer of those bodies used to dissolve and in that way they used to study anatomy. It is not unscientific. But now we are able to inject arsenic into bodies and keep them without decay for three or four days. Should we go back to those ancient days? Should we study anatomy by tying dead bodies and keeping them in a running stream? Obviously, we cannot go back to that stage.

That is why, Sir, with regard to the main resolution, with great respect, I would request Shri Yashpal Singh to withdraw his resolution. It is very dangerous at the moment to change the system. A time may come when ayurveda takes its rightful place and there would then be only one scientific system. Then it would be easier and desirable to integrate all the system into one scientific system, call it whatever they like and replace it.

Shri Hari Vishnu Kamath: So it may be inopportune; it is not dangerous.

Dr. D. S. Raju: It is very dangerous. I gave you, Sir, so many reasons to prove why it is dangerous.

The substitute resolution moved by Dr. Singhvi reads:

> "This House is of opinion that the Ayurvedic system of medicine should be given increasing aid and attention so that it may flourish."

I have just now given the details as to how we are trying to help Ayurved. So, the spirit of that resolution is accepted.

Dr. L. M. Singhvi: Are you going to accept my substitute motion?

Dr. D. S. Raju: I am not going to accept it. I have said that we have accepted the spirit of it, the principle behind it. That is why I have tried to demonstrate how we are going to help Ayurved. So, that substitute motion is not necessary and may be withdrawn.

The second motion is by Dr. Gaitonde which reads:

> "This House is of opinion that Allopathic and Ayurvedic systems of medicine be replaced by scientific medicines."

So far as the name "allopathy" is concerned, we have no objection to changing it; but that is the term used in some of the foreign countries as well. All the same, we have no objection to changing it to modern system of medicine. But so far as Ayurved is concerned, some sentiment is attached to that name. Also, it is bound up with the civilisation and culture of our country. So, I would rather not accept that proposition.

The third motions reads:

> "This House is of opinion that along with allopathic system of medicine, wherever it may be possible, Ayurvedic system of medicine be also used effectively."

It is not possible. We cannot use both the systems, allopathy and Ayurveda along side on the same patient. It is very wrong. So, it is not possible on that count.

The fourth motion is that Ayurvedic system of medicine may be given preference. It is actually a substitute to replace the original Resolution of Shri Yashpal Singh and almost similar to the original one. So, it is also not acceptable to me.

Then, the hon. Minister has replied in Hindi and covered in her speech most of the points which hon. Members have raised. But I would like to say something about the remark of Shri Hanumanthaiya. He has suggested that a Central Council be instituted on the same lines as the Indian Medical Council. Actually, this was discussed by the State Boards of Faculties of Indigenous Systems of Medicine in a meeting which was held in Naini Tal one or two years ago. They have recommended this proposition that a Central Council of Indigenous Medicine be formed on the same lines as the Indian Medical Council. That is under contemplation.

Shri Hanumanthaiya: On a personal explanation. It must be separate. Usually, they mix up Ayurved and Unani. Unani, as you know, is a Greek system of medicine. I have found in my State and several other States in the indigenous hospitals as well as educational institutions these two systems are mixed up. This mixing up does no good to either system of medicine. Therefore, I was referring to "Ayurveda system" and not to "indigenous system".

Shri Bade: Now the Mahabaleshwar Resolution has superseded the Naini Tal Resolution.

Dr. D. S. Raju: The suggestion made by Shri Hanumanthaiya will, of course, receive due consideration.

Shri Khadilkar referred to the conversation of the hon. Minister with

Shri Nanda. What she meant to say was that we will always keep an open mind and we are not dogmatic or fanatic. She only meant that we will always receive good and intelligent suggestions from all quarters. She did not mean to say that she was completely in the hands of Shri Nanda. It is not at all like that. She only said that we have an open mind, whether it is allopathy, ayurved or any other system.

Some of the hon. Members have referred to integrated system of medicine. If I may say so, unfortunately, it has become very unpopular. I had occasion to visit an integrated medical college in Madras some four years ago. When I went and inspected the college I found that even the teachers who were teaching Ayurved in the colleges were practising allopathy in their homes. I have seen it myself. Most of the doctors who pass out of the integrated medical college, GCIM and LIM, they are practising the allopathic system of medicine, and nobody is practising the Ayurvedic system of medicine. That is the unfortunate part of it. It all depends upon the needs and desires of the people. If they desire a particular system of medicine, we have to take serious notice and give consideration to their demands.

So, for all these reasons, if hon. Members would withdraw the Resolution and the substitute motions, I would be most happy.

श्री यशपाल सिंह : उपाध्यक्ष महोदय, मैं उन सब मेम्बरान का आभारी हूं जिन्होंने इस मामले में राय दी है । हमारे यहां मुखालफत जो है वह भी वरच् मानी जाती है । भगवान महावीर स्वामी ने दोनों को मान्या कहा है, जो खिलाफ बोलते हैं उस को भी और जो हक में बोलते हैं उस को भी । Much can be said against and for. इसलिये मैं उन दोनों साहबान का बड़े सच्चे दिल से आभारी हूं कि उन्होंने मुझे राय दी और इस हाउस के दीगर मेम्बरान का आभारी हूं कि इतनी शांति के साथ इस बात को सुना गया । मैं कोई ऐसी बात नहीं कहना चाहता जो समझ में न आये । १०० फीसदी समझ में आ जाये और आप कनविस हो जायें तब मैं आगे जलूंगा । आयुर्वेद के साथ जो स्टैप मदरली ट्रीटमेंट किया जा रहा है उस को मैं एक मिसाल देता हूं । जैसे मंत्री जी चांदनी चौक में चले जायें और चांदनी चौक का लाला यह कहे कि तुम ने कपड़ा खरीदा है या नहीं खरीदा है, लेकिन दाम तुम्हें जरूर देने पड़ेंगे । आप ने कोट का कपड़ा नहीं लिया you did not buy a single yard, लेकिन चांदनी चौक का लाला कहता है कि तुम ने कपड़ा लिया या नहीं लिया लेकिन दाम जरूर देने पड़ेंगे, मेरे साथ ठीक यही बात हो रही है । मैं एलोपैथी को पाप मानता हूं I would prefer death to this decaying system of allopathy. एक तरफ मौत हो और दूसरी तरफ एलोपैथी का सिस्टम हो और मुझे उन दो में से चुनना हो तो मैं एलोपैथी के बजाय मौत को अंगीकार कर लूंगा । सरकार सी० एच० एस० का मुझ से भी काटते हैं । डाक्टरी इलाज और दवाओं के खातिर मेरी तनख्वाह से भी पैसा काटती है । अगर आयुर्वेद के लिये मेरी तनख्वाह से कटता तो मुझे खुशी होती कि मेरी संस्कृति के पुजारियों के लिये काट रहे हैं मेरे वैद्यों के लिये काट रहे हैं लेकिन उन के लिये न काट कर यह उन लोगों के लिये कट रहा है जिन्होंने कि हजारों को जहर पिला कर मार दिया, जिन्होंने कि आपरेशन के दौरान हजारों को बिला मौत के मार दिया । जब ऐसे लो ों के लिये मेरी तनख्वाह में से पसा कटता है तो इस से बढ़ कर बेइंसाफी और क्या हो सकती है ? यह बेइंसाफी एलोपेथी के हक में की जाती है ।

मैं कोई बात ऐसी न कहूंगा जो कि १०० फीसदी समझ में न आये । एलोपैथी की सपोर्ट और वकालत करते हुये एक चीज हम से

[श्री यशपाल सिंह]

है कि हम संसार में यह न कह सकें कि हमारे पास ऋषियों द्वारा रचित ऐसे ग्रन्थ हैं जिनमें यह भी कही जाती है कि आयुर्वेद सिस्टम पुराना हो गया, हजार साल पहले अथवा दस हजार साल पहले बना था तो मैं उन सज्जनों से पूछना चाहूंगा कि वह चूंकि बहुत पहले बना था और पुराना हो गया है महज इसीलिये क्या आप उसे छोड़ देंगे ? फिर तो मैं कहूंगा कि सूर्य करोड़ों साल पहले बना था क्या आप सूर्य को इंकार कर देंगे क्यों कि वह पुराना हो गया है और चूंकि पुराना हो गया है इस लिये उसकी रोशनी बेकार हो गई है ? क्या आप समुद्र को इंकार कर देंगे क्योंकि वह पुराना हो गया है? इसी तरह चांद को आप क्या यह कह कर इंकार कर देंगे कि वह पुराना हो गया है और उस की रोशनी व्यर्थ हो गई है ? इसी तरह क्या आप पानी को इंकार कर देंगे ? मैं पंडित नेहरू के लफ्जों में कहना चाहता हूं :

"A thing that is modern is not necessarily good, because it is modern; and a thing that is old is not necessarily bad, because it is old. The converse is also true.... What then should our objective be? Obviously our approach should be one of trying to profit by past experience and integrating ourselves with the best in other systems."

किसी चीज को आप इस लिये कंडम कर दें कि वह पुरानी है तो क्या परमेश्वर और भगवान जो कि सब से पुराने हैं उन से आप इंकार कर देंगे ? हिमालय सब से पुराना है इस लिये क्या आप हिमालय से इंकार कर दीजियेगा ? मैं अमूल के तौर पर कहता हूं कि मैं अपने इस प्रस्ताव को वापिस नहीं लूंगा और उस को इस लिये वापिस नहीं लूंगा कि एक एक आदमी जब सच्चाई के लिये लड़ा है, मेरे साथ तो हजारों साथी हैं। "रामो द्विर्नाभिभाषते"। मेरे दादा ने यह बात कही है। राम अपनी बात को कह कर वापिस नहीं लेता है। मैं उन का वंशज हूं, मैं उन की मर्यादा को तोड़ नहीं सकता। मैं यह भी जानता हूं कि चाहे संसार खिलाफ ही सच्चाई सामने आकर रहेगी।

It is easy enough to be happy when life flows like a song but the man worth while is the man who can smile when everything goes dead wrong.

श्री भागवत झा आजाद (भागलपुर) : भाई, हम लोग तो आप के विचार के समर्थक हैं, एक सिरे से सब को तो डाउन मत कीजिये।

श्री यशपाल सिंह : जब मैं यह जानता हूं कि इतिहास में सच्चाई के लिये एक, एक मनुष्य लड़ा है, झंडा बुलंद किया है, सत्यमेव जयते को जब मैं मानता हूं, परम पिता परमेश्वर को जब मैं मानता हूं तब मैं अपने प्रस्ताव को वापिस नहीं ले सकता हूं।

एलोपैथी के मुकाबिले आयुर्वेद को जो मैं बैहतर मानता हूं यह बात आप की तब समझ में आयेगी जब एलोपैथीक सिस्टम की मडिकल एथारिटीज जिनको आप मानते हैं, उन को बीमार सौंप कर देखिये और हम आयुर्वेद वालों को बीमार सौंप कर देखिये, ज्यादा नहीं ६ महीने ट्राई करके देखिये, अगर हमारा रेजल्ट उन से ८० फीसदी बढ़ा हुआ न हो तो मुझ को कैपिटल पनिशमेंट दिया जाय, मेरा हाथ कटवा दिया जाय और मुझ को इस हाउस में खड़ा करके गोली से उड़वा दिया जाय। लेकिन यहां पक्षपात उन के लिय है जो कि यहां से ५००० मील पर बैठे हैं, जो हमारी सभ्यता और संस्कृति के विरोधी हैं जिसे आप एडैप्टेबिल्टी कहते हैं। मैं उसे कैरेक्टरलैसनेस कहता हूं जिस में अपना चरित्र नहीं है, अपनी संस्कृति नहीं है, अपना इतिहास नहीं है, अपना तमद्दुन् नहीं होता और अपना कल्चर नहीं होता, ऐसे लोग ही दूसरों से आदर्शों की भीख मांगा करते हैं। जिस आयुर्वेद से करोड़ों साल तक

इस संसार ने फायदा उठाया है वह आयुर्वेद आज अनफिट नहीं हो सकता । अलबत्ता हमारे जो कर्णधार हैं उनकी बुद्धि अभी जरा अनफिट है और जल्दी ही साल, दो साल में उन को परम पिता परमेश्वर जब सद्बुद्धि देंगे तब आयुर्वेद सिस्टम को कायम किया जायगा ।

मैं माननीय डा० सुशीला नायर के भाषण से बहुत ही ज्यादा निराश हुआ । उस में ऐसी अनहोनी बातें कही गयीं और ऐसी अनऐतिहासिक बातें कही गई, ऐसी अप्रामाणिक बातें कही गई कि सुश्रुत के जमाने में आंखें फोड़ते थे और ९९ प्रतिशत आदमियों की आंखें फूट जाती थीं । वे सुश्रुत से इन्कार करती हैं । मैं निवेदन करना चाहता हूं कि आयुर्वेद तो हिमालय के समान है और एलोपैथी एक चींटी के समान है । जिस तरह से चींटी हिमालय पर बैठ कर हिमालय का अन्दाजा नहीं कर सकती, उसी तरह एलोपैथी हमारे आयुर्वेद का अन्दाजा नहीं कर सकती ।

माननीय मंत्रिणी जी ने कहा है कि दोनों सिस्टम साथ साथ चलेंगे । दोनों सिस्टम न कभी साथ चले हैं और न चल सकते हैं । संसार में या तो सत्य चलेगा या असत्य चलेगा । सत्य और असत्य का जब मिश्रण हुआ, तभी नुक्सान हुआ । हम ने पंचशील के साथ अपनी संस्कृति को मिलाया, इसीलिय हम डिफ़ीट और पराजय का मुंह देख रहे हैं । हमारा ५६ हजार वर्ग मील क्षेत्र दूसरे मुल्क के अधीन चला गया है, क्योंकि हम ने अपनी संस्कृति को ग़ैरों की संस्कृति के साथ मिला दिया था । जो कहते हैं कि दोनों सिस्टम साथ साथ चलेंग, मैं उन के सामने वर्ल्ड की हाइएस्ट अथारिटी, आटो फ्रिश, के ये शब्द रखना चाहता हूं :—

"The physicist appears to be in the awkward position of a judge who is called upon to settle a quarrel between two parties each of whom has an equally convincing case and equally large crowd of trustworthy witnesses.

There was a legendary judge —like our Minister Sushila Nayar Sir—who tried to extricate himself by saying that both parties were right despite the ridicule which the judge received. The physicist of today takes a similar attitude in the case."

दोनों में से एक रास्ता अख्त्यार करना पड़ेगा ।

"दोरंगी छोड़ कर यकरंग हो जा,
सरासर मोम हो या संग हो जा" ।

या तो पांच हजार मील पर बने हुए सिस्टम को मानना होगा और या हमारे बाप-दादाओं, हमारे ऋषि-मुनियों, हमारे टार्च-बीयरर्ज़ के सिस्टम को मानना होगा ।

जिस को एवोल्यूशन कहा जाता है, उस को मैं एवोल्यूशन नहीं कहता हूं । मैं कहता हूं कि वह अज्ञान की तरफ जाना है । जिन किताबों को हमारे कई मित्र पढ़ते हैं, उन से अज्ञान पैदा हुआ, बीमारियां पैदा हुईं । मैं पूछता हूं कि क्या स्वामी रामकृष्ण परमहंस पढ़े हुए थे । वह अनपढ़ थे, लेकिन उन के ज्ञान के चक्षु खुले हुए थे । क्या छत्रपति शिवाजी महाराज पढ़े हुए थे ? वह अनपढ़ थे लेकिन उन की इन्नर आईज़ खुली हुई थीं । क्या हजरत रसूल अल्लाह सली अल्लाह अलिया व सलम पढ़े हुए थे ? वह अनपढ़ थे, लेकिन उन के ज्ञान के चक्षु खुले हुए थे और आज भी अस्सी करोड़ इन्सान उन के नूर से मुनव्वर होते है ।

श्री चं० ला० चौधरी (महुआ) : आन ए प्वाइंट आफ़ आर्डर, सर ।

श्री यशपाल सिंह : माननीय सदस्य अपनी बात बाद में कह सकते है । (*Interruptions*)

श्री चं० ला० चौधरी : मैं ने वायंट आफ आर्डर उठाया है । माननीय सदस्य

[श्री चं० ला० चौधरी]

ज़रा ठहर जायें । जो कुछ वह कह रहे हैं, वह बिलकुल ग़लत है । (*Interruptions*)

उपाध्यक्ष महोदय : आर्डर, आर्डर ।

श्री यशपाल सिंह : मैं ने जो कुछ कहा है, उस को मैं साबित कर दूंगा ।

हज़रत रसूल अल्लाह सली अल्लाह अलिया व सलम की ज्ञान की आंखें खुली हुई थीं । उन में नूर था और उन के नूर से आज भी अस्सी करोड़ इन्सार मुनव्वर होते हैं । अगर माननीय सदस्य यह बात इस्लामिक प्वायंट आफ़ व्यू से ग़लत साबित कर देंगे, तो मैं . .

श्री चं० ला० चौधरी : आन ए प्वायंट आफ़ आर्डर, सर ।

Mr. Deputy-Speaker: What is the point of order?

श्री चं० ला० चौधरी उपाध्यक्ष महोदय, जनाब सरवरे-कायनात मुहम्मद मुस्तफ़ा सली अल्लाह अलिया व सलम का जहां तक सवाल है, माननीय सदस्य ने कहा है कि वह जाहिल थे । उन्हों ने बिल्कुल समझा नहीं है । (*Interruptions*) क्या वह समझते हैं कि हम उन की कम इज्ज़त करते है ? (*Interruptions*)

श्री यशपाल सिंह : मैं माननीय सदस्य से ज्यादा उन की इज्जत करता हूं ।

श्री चं० ला० चौधरी : माननीय सदस्य ने बिल्कुल ग़लत कहा है । जनाब सरवरे-कायनात के मुताल्लिक उन्हों ने जो कुछ कहा है, वह एक फ़िर्कापरस्ती की बात मालूम होती है । माननीय सदस्य को सोच समझ कर ऐसी बात कहनी चाहियें और देखना चाहिये कि सारे हिन्दुस्तान पर इस का क्या असर हो सकता है । उन्होंने इस को विदड्रा करना चाहिये ।

श्री यशपाल सिंह उन को हज़रत उम्मी कहते है । माननीय सदस्य ने अभी हिस्ट्री नहीं पढ़ी है (*Interruptions*) हज़रत रसूल अल्लाह सली अल्लाह अलिया व सलम के मुताल्लिक मैं ने उन से ज्यादा पढ़ा है ।

श्री चं० ला० चौधरी : मैं ने खूब अच्छी तरह से पढ़ा है । (*Interruptions*)

श्री यशपाल सिंह : अगर मेरी बात ग़लत होगी, (*Interruptions*) सो आई मस्ट बि पनिश्ड फ़ार दैट ।

मैं कह रहा था कि जिसे हमारे मित्र ज्ञान कहते हैं, वह अज्ञान है । जिसे वह एवोल्यूशन कहते हैं, वह एवोल्यूशन नहीं है, बल्कि वह हम में बीमारियां पैदा कर रहा है और हम को गिरावट की तरफ़ ले जा रहा है । मेरी दरख्वास्त है कि हमारे मित्र सच्चाई के नाम पर अन्धेरे को नहीं ला सकते हैं । या तो प्रकाश का राज्य होगा, या संसार अंधेरे में रहेगा । जिस सिस्टम को हम मिटाना चाहते हैं, उस को हमारे मित्र किसी न किसी तरह कायम रखना चाहते है ।

जिस का ज़िक्र हमारे मित्र करते ह, वह मैटीरियलिज्म है । वे ऐसे लोग ह, जो हमारी संस्कृति और हमारे तमद्दुन से वाकिफ़ नहीं ह । हमारा बुनियादी तौर से इख्तलाफ़ है । हमारा आयुर्वेद कहता है कि मनुष्य का ज्ञान और शक्ति अथाह है । दूसरे लोग कहते हैं कि चालीस साल की उम्र में आदमी डीके की तरफ़ बढ़ता है, जबकि हम कहते हैं कि चालीस साल की उम्र में आदमी डीके की तरफ़ नहीं बढ़ता है । हम कहते हैं कि बालब्रह्मचारी, योगी और भजनीक से बुढ़ापा और मौत दोनों थरथर कांपते ह और जो हमारे जैसे पापी लोग ह, उन के लिय हमारे यहां लिखा हुआ है कि "अशीतीवर्षो युवा" —अस्सी साल का आदमी जवान होता है । अगर कोई आदमी चालीस साल की उम्र में अपने आप को बूढ़ा समझता हो, तो यह बदकिस्मती की इन्तहा है ।

इन शब्दों के साथ मैं सरकार से प्रार्थना करना चाहता हूं कि हम यह प्रस्ताव वापिस नहीं लेंगे और वह हमारे साथ हमदर्दी, प्रेम और मुहब्बत के नाते, महात्मा गांधी और इंडियन कल्चर के नाम पर, वोटिंग में हमारा साथ दे । आयुर्वेद को आज से ही कायम किया जाय ।

Mr. Deputy-Speaker: I shall now dispose of the amendments. Is Dr. Gaitonde pressing his amendment?

Dr. Gaitonde: As the principle has been accepted by Government, I do not think there is any need to put it to vote. I would like to withdraw it.

The amendment No. 1 was, by leave, withdrawn.

Mr. Deputy-Speaker: Then, there are two amendments in the names of Dr. L. M. Singhvi and Shri Raghunath Singh. The hon. Members are absent. So, I shall now put amendments Nos. 2 and 3 to vote.

The amendments No. 2 and 3 were put and negatived.

Mr. Deputy-Speaker: Then, there is an amendment in the name of Shri Rananjaya Singh. Is he pressing it?

श्री रंणजय सिंह : जी नहीं ।

The amendment No. 4 was, by leave, withdrawn.

Mr. Deputy-Speaker: Then I come to amendment No. 5 in the name of Shri D. N. Tiwary. The hon. Member is absent. So, I shall put it to vote.

The amendment No. 5 was put and negatived.

Shri B. K. Das: I would like to withdraw amendment No. 6 standing in my name.

The amendment No. 6 was, by leave, withdrawn.

Mr. Deputy-Speaker: Now, I shall put the resolution to vote.

The question is:

"This House is of opinion that allopathic system of medicine be replaced by the Ayurvedic system in the country.".

The motion was negatived.

18.08 hrs.

RESOLUTION *RE*: CONCENTRATION OF ECONOMIC POWER

Shri Bhagwat Jha Azad (Bhagalpur): I beg to move:

"This House is of opinion that while no efforts should be spared to strengthen the defence of the country to fight out the Chinese aggression, constant vigilance should be kept against the possibility of concentration of economic power and wealth, increase in inequality of income . . .

श्री यशपाल सिंह : मैंने अपना रेजोल्यूशन वापिस नहीं लिया है ।

Mr. Deputy-Speaker: The resolution has been lost.

श्री यशपाल सिंह : मैंने अपना रेजोल्यूशन वापिस नहीं लिया है ।

श्री यशपाल सिंह : मुझे इसकी इत्तिला नहीं मिली है ।

Mr. Deputy-Speaker: It has been put to vote and defeated.

Shri Yashpal Singh: If it has been defeated, I have not been informed of it.

Mr. Deputy-Speaker: It has been defeated by the House. I have now called the Mover of the next resolution.

Shri Bhagwat Jha Azad: I beg to move:

"This House is of opinion that while no efforts should be spared to strengthen the defence of the country to fight out the Chinese aggression, constant vigilance